(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 54, अंक 6, दिसम्बर, 2018
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

नव वर्ष तथा
भविष्य में आने वाली नव सृष्टि की
आप सबको
बहुत बहुत बधाई हो

1.कटक (कॉलेज स्क्वेयर)- उड़ीसा के राज्यपाल महामहिम डॉ.गणेशीलाल को ईश्वरीय साहित्य प्रदान करते हुए ब्र.कु.कुलदीप बहन। **2.वीरगंज (नेपाल)-** 'ग्लोबल इनलाइटनमेंट फार गोल्डन एज' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता रमेश प्रसाद कुर्मी, ब्र.कु.किरण बहन, ब्र.कु.रवीना बहन, ब्र.कु.राज बहन, प्रदेश नं.2 के सामाजिक विकास मन्त्री भ्राता नवलकिशोर शाह, विधायक भ्राता पारस शाह तथा ब्र.कु.राम सिंह भाई। **3.भोपाल-** संत सभा में ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु.अवधेश बहन। मंचासीन हैं मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह तथा अन्य सन्तगण। **4.हैदराबाद (शान्ति सरोवर)-** ग्लोबल कल्चरल फेस्टीवल का उद्घाटन करते हुए बेलारस (रशिया) से पधारे मोटिवेशनल स्पीकर भ्राता एलक्से तालाई, ब्र.कु.कुलदीप बहन, ब्र.कु.सन्तोष बहन तथा अन्य। **5.जयपुर (जवाहर सर्किल)-** चैतन्य देवियों की झाँकी का अवलोकन करने के बाद राजस्थान के चिकित्सा मंत्री भ्राता कालीचरण सर्राफ, ब्र.कु.पूनम बहन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **6.रायपुर-** युवा बस यात्रा के आगमन पर आयोजित समारोह का शुभारम्भ करते हुए कुशाभाऊ ठाकरे पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.मानसिंह परमार, ब्र.कु.कमला बहन, पं.रविशंकर शुक्ल वि.वि.के कुलपति डॉ.के. एल.वर्मा और अन्य। **7.भदोही-** भारत सरकार की कपड़ा मंत्री बहन स्मृति ईरानी का स्वागत करते हुए ब्र.कु.विजयलक्ष्मी बहन। **8.लखनऊ (गोमती नगर)-** चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए उ.प्र.के उप-मुख्यमंत्री डॉ.दिनेश शर्मा, ब्र.कु.राधा बहन तथा अन्य।

संजय की कलम से –

परम आनन्द की प्राप्ति का साधन –

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अनुशासन, नियम अथवा व्रत है। इस द्वारा मनुष्य अपने भीतर एक बहुत ही उत्तम शक्ति का भण्डार एकत्रित और सुरक्षित कर लेता है। यह शक्ति शरीर को स्वास्थ्य, बल, तेज, सौन्दर्य और दार्घायु प्रदान करती है। यह मनुष्य के मनोबल को बढ़ाती है, उसकी वाणी को प्रभाव-उत्पादक एवं ओजस्वी बनाती है और उसके मुख-मण्डल को दिव्य कान्ति देती है। जो कोई भी ब्रह्मचर्य का पालन करता है, यह शक्ति उसके नेत्रों में एक अद्‌भुत आभा भर देती है, उसके ललाट को एक अलौकिक चमक प्रदान करती है और उसके व्यक्तित्व में चुम्बकीय आकर्षण तथा एक अपूर्व उल्लास ला देती है।

ब्रह्मचर्य द्वारा मनुष्य जिस शक्ति का संचय करता है, वह शक्ति उसके सद्‌गुणों के विकास में तथा समाज सेवा में भी बहुत सहयोगी हो सकती है। इससे मनुष्यात्मा महान अथवा महावीर और धीर बन सकती है।

ब्रह्मचर्य-शक्ति को मनुष्य विद्योपार्जन में लगा कर अपना बौद्धिक विकास तथा आत्मिक उन्नयन कर सकता है। इस तप द्वारा जितेन्द्रिय बनकर वह सन्तोष-सुख पा सकता है और इच्छाओं की गुलामी से छूट सकता है।

इस प्रकार, ब्रह्मचर्य एक ऐसी साधना है जिस द्वारा मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक एवं नैतिक सर्वतोमुखी विकास एक-साथ ही हो जाता है। इसके बिना मनुष्य निस्तेज, आलसी अथवा मुर्दा-सा हो जाता है क्योंकि यही वह शक्ति है जो शरीर को स्फूर्ति और सार, मन को अदम्य उत्साह और उमंग और आत्मा को वर्चस्व प्रदान करती है। स्थूल रूप में यह मनुष्य के भोजन का सार है और उसके तेज का आधार है। सूक्ष्म रूप में यह उसके मन का वेग और वाल्व (valve) अथवा ब्रेक है और मूल रूप में यही आत्मा के परमोत्कर्ष का साधन है।

ईश्वरानुभूति के लिए साधना का एक अंग

भारत में जितने भी भक्त, सन्त, संन्यासी इत्यादि हुए हैं, प्राय: उन सभी ने आध्यात्मिक साधना की सफ़लता के लिए ब्रह्मचर्य को बहुत आवश्यक बताया है। योग-दर्शन में इसकी गणना पाँच यमों के अन्तर्गत की गयी है। बापू गाँधी जी ने भी अपने लेखों तथा पत्रों में इसका बहुत उच्च माहात्म्य बतलाया है। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में तो इसे ईश्वरानुभूति तथा राजयोग के अभ्यास के लिए अनिवार्य बताया गया है। इनकी मान्यता है कि इस द्वारा प्राप्त शक्ति से मनुष्य अन्य मनोविकारों का भी अन्त कर सकता है तथा वह जितेन्द्रिय एवं एकाग्रचित्त होकर ईश्वरीय लगन में मग्न होने का परम आनन्द प्राप्त कर सकता है। ■■■

अमृत-सूची

निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सो (सम्पादकीय)	4
प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के	8
पत्र सम्पादक के नाम	10
किसान – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में	11
परीक्षा के भय से मुक्ति	14
पतन का जतन	17
धरा की पुकार (कविता)	19
सफलता का रहस्य	20
कम करो व्यर्थ का वजन	21
थामा है दामन तुम्हारा (कविता)	22
ब्रह्माकुमारी संस्थान से जुड़कर	23
दिल सच्चा तो सब कुछ अच्छा	24
प्यार की भाषा में है जादुई शक्ति	26
जैसा विचार, वैसा व्यक्तित्व	27
श्रद्धांजली	28
सचित्र समाचार	29
मानव आत्मा का रूपान्तरण	30
उम्र की जंजीरों से आजाद रहें	31
सचित्र समाचार	32
नशा मजा है या सजा	34

सम्पादकीय . . .

निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सो

काव्यमयी भाषा में एक नीति वचन है – 'निन्दा हमारी जो करे मित्र हमारा सो'। इसमें एक आध्यात्मिक पुरुषार्थी को यह बताया गया है कि किसी निन्दक के प्रति उसका क्या दृष्टिकोण होना चाहिए। इस उक्ति की शब्द-रचना ही ऐसी है कि इसके केवल इसी पहलू पर ध्यान जाता है कि जो हमारी निन्दा करता है, हम उसे अपना मित्र समझें ; इससे निन्दक-सम्बन्धी अन्य दो पहलुओं पर प्राय: ध्यान नहीं जाता यद्यपि उन दोनों पहलुओं पर भी ध्यान रखना पुरुषार्थ की सफलता के लिए जरूरी है।

विचार करने पर आप मानेंगे कि निन्दा के कर्म का संबंध कम-से-कम तीन व्यक्तियों से तो सदा हुआ ही करता है। एक वह जिसकी निन्दा की जा रही हो, दूसरा वह जो निन्दा कर रहा हो, तीसरा वह जो निन्दा सुन रहा हो। इस विषय के तीनों ही पहलुओं को समझना जरूरी है।

प्रथम पहलू

अब जहां तक निन्दित व्यक्ति का सम्बन्ध है उसके लिए तो यही श्रेयष्कर है कि वह निन्दक को अपना मित्र ही माने क्योंकि ऐसा दृष्टिकोण अपनाने से उसके मन में उद्वेग, घृणा, वैर, शत्रुता, प्रतिशोध इत्यादि दुर्भावनायें जागृत नहीं होंगी और इससे उसका मन रूपी मानसरोवर भी शीतल और शान्त रहेगा और वह उसमें से ज्ञान और गुण रूपी मोती चुगने वाला हंस ही बना रहेगा। इसके अतिरिक्त बात यह भी है कि हम मित्र उसे ही तो कहते हैं जो हमारा हित करता हो और हमें सहायता देता हो। निन्दक भी पुरुषार्थी का ध्यान उसके दोषों की ओर खींचता है, इसलिए वह भी बिन मांगे सहायता देने के कारण एक प्रकार से उसका 'मित्र' ही तो है। यदि निन्दित व्यक्ति अपनी कमजोरियों को मिटाने में लग जाए और इसके लिए सदा सम्पूर्ण परमपिता परमात्मा में अधिकाधिक मन समाहित करने रूपी योगाभ्यास में जुट जाए तो इससे उसका भला ही तो होगा। अत: निन्दक के शब्द उसके लिए सचेतक ही तो सिद्ध होंगे। यदि नीति की दृष्टि से देखा जाए तो भी निन्दक को 'मित्र' मानना ही ठीक है क्योंकि उसे शत्रु मानकर उसका सामना करने से तो वह और ही ज्यादा भड़केगा और निन्दा करने लगेगा तथा अपनी बात को सत्य सिद्ध करने का भरसक यत्न करेगा। ऐसी प्रतिक्रिया से तो पुरुषार्थी का समय और भी ज्यादा व्यर्थ जाएगा और बुरे प्रकम्पनों के कारण वातावरण भी बिगड़ेगा। अत:निन्दक के तिरस्कारात्मक शब्दों को सहन कर लेना ही सब प्रकार से हितकर है क्योंकि इससे सहनशीलता की परीक्षा पार करके हमारी दिव्यता का उत्कर्ष ही होगा और यदि हमारे पिछले किन्हीं कर्मों के कारण ऐसा ही हिसाब रहा होगा तो वह भी चुकता ही होगा और सम्भव है कि समयांतर में हमें

श्रोताओं की और स्वयं निन्दक की भी सहानुभूति प्राप्त हो। इस प्रकार आज जो निन्दनीय है, कल वह अपने सर्वोत्तम पुरुषार्थ से वन्दनीय बन जायेगा।

दूसरा पहलू

ऊपर हमने प्रथम पहलू के बारे में जो कुछ कहा है उस पर तो तीव्र पुरुषार्थियों का प्राय: ध्यान रहता ही है परंतु जहां तक निन्दक का संबंध है उसके विषय में भी हमें थोड़ा सोचना चाहिए। निन्दापूर्ण वचन कहकर वह तो विकर्म ही का भागी बनता है। जैसे कौवा गन्दगी के ढेर पर बैठकर, कचड़े को बिखेरता और चुराता है, वैसा ही कर्म तो निन्दक भी करता है। अत: यदि हम उसे मित्र मानकर उससे अपनी निन्दा सुनते रहें तो भले ही इससे हमें अपनी कमजोरियों का बोध तो हो जाएगा परन्तु निन्दक का समय तो पाप-कर्म में ही जाएगा। अत: वह एक अर्थ में, परोक्ष रूप से हमारा मित्र है तो दूसरे दृष्टिकोण से वह स्वयं तो अपना शत्रु ही है। अत: हमें यह चाहिए कि हम उसे इस कर्म में प्रोत्साहन देने के निमित्त भी न बनें वरना वह निन्दक के साथ-साथ ढीठ और निर्लज्ज भी बन जाएगा और हर आए दिन हममें या किसी अन्य में कोई-न-कोई नुक्स निकालते रहने की आदत ही बना लेगा जिससे पापों का बोझ और भी अधिक होता जाएगा। इसलिए हमें पहली कोशिश तो यही करनी चाहिए कि हम लोक-संग्रह को सामने रखकर कर्म करें और सम्पूर्णता की ओर बढ़ने का यत्न करें, परन्तु फिर भी यदि निंदा करने वाला अपनी आदत से मजबूर होकर अवगुण-दर्शन में ही लगा रहता है तो हमें उसकी बातों में अपना अधिक समय भी व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए। हमें स्वयं का सुधार अवश्य करना चाहिए और मान-अपमान में समान तथा सहनशील भी होना चाहिए परन्तु निन्दा को दास्तान अथवा पुराण बनाने में भी सहयोगी नहीं बनना चाहिए।

तीसरा पहलू

अब जो व्यक्ति निंदा सुनता है, उसे वास्तव में अपने ऊपर विशेष ध्यान देना चाहिए। आध्यात्मिक पुरुषार्थी के लिए तो यह शिक्षा है कि बुरा मत सुनो, बुरा मत बोलो

हमें मालूम होना चाहिए कि निन्दा एक प्रकार का जहर है और हरेक व्यक्ति यह जहर नहीं पी सकता। निन्दा एक ऐसी कैंची है जो दूसरे से हमारे स्नेह और सम्मान के सम्बन्ध का विच्छेद करती है। निन्दा सुनने की आदत तो मनुष्य को बाह्यमुखी बनाती है और परमात्म-चिंतन की बजाय दोष-चिंतन या आसुरीयता-चिन्तन में लगाती है। अन्य की निन्दा सुनने में दिलचस्पी लेना गोया दोष-दर्शन और अवगुण-ग्रहण करने की आदत को धारण करना है। इस आदत से तो पतन निश्चित ही है।

और बुरा मत देखो। अत: निष्प्रयोजन ही दूसरों की बुराई सुनने में अपना समय देना स्वयं को एक प्रकार से कचड़े का डिब्बा अथवा रद्दी की टोकरी बनाना है। दूसरे की निन्दा सुनते-सुनते श्रोता का, आज नहीं तो कल, उसके बारे में वैसा दृष्टिकोण बन जाना भी सम्भव है और उसके प्रति स्नेह, सम्मान और सौहार्द की दृष्टि न रहने से अपनी वृत्ति का भी दूषित होना सम्भव है और यह सब तो निश्चय ही पतन की ओर ले जाने वाली बातें हैं।

हमें मालूम होना चाहिए कि निन्दा एक प्रकार का ज़हर है और हरेक व्यक्ति यह ज़हर नहीं पी सकता। निन्दा एक ऐसी कैंची है जो दूसरे से हमारे स्नेह और सम्मान के सम्बन्ध का विच्छेद करती है। निन्दा सुनने की आदत तो मनुष्य को बाह्यमुखी बनाती है और परमात्म-चिंतन की बजाय दोष-चिंतन या आसुरीयता-चिन्तन में लगाती है। अन्य की निन्दा सुनने में दिलचस्पी लेना गोया दोष-दर्शन और अवगुण-ग्रहण करने की आदत को धारण करना है। इस आदत से तो पतन निश्चित ही है। पुनश्च, दूसरों की निन्दा सुनना इस बात को भी सिद्ध करता है कि निन्दित व्यक्ति के प्रति हमारा स्नेह नहीं है

अथवा उसमें हमारे निश्चय की कमी है अथवा उससे हमें ईर्ष्या है। अत: निन्दा-श्रवण में समय देना गोया इन सब बुराइयों को भी अपने में पनपाना है। फिर, हमें यह भी सोचना चाहिए कि निन्दक द्वारा की गई निन्दा यदि मिथ्या है तो उसकी हां-में-हां मिलाकर अथवा मौन रहते हुए उसे सुनकर हम उसे भी प्रोत्साहन दे रहे हैं। इससे आगे के लिए फिर-फिर हमारे पास आकर दूसरों की निन्दा करने का हम उसका स्थान बना रहे हैं। अत: कोयलों की इस दलाली में हम अपने भी तो हाथ काले कर ही रहे हैं और शायद अपने कपड़े भी काले कर रहे हैं क्योंकि अन्य सभी भी हमें देखते हैं कि हम इसी धन्धे में लगे रहते हैं अथवा निन्दा की चौपाल हमारे यहां पर है। इसके अतिरिक्त, यह भी सोचने की बात है कि निन्दा करने वाले का प्रयोजन क्या है? अवश्य ही उसका या तो कोई स्वार्थ अटका होगा या उसके मन में कोई ईर्ष्या होगी या उसकी अपनी आदत ही ऐसी होगी वरना दूसरे को बदनाम करने की उसे आवश्यकता ही क्या है? तब ऐसे व्यक्ति के इस निकृष्ट प्रयोजन की सिद्धि के लिए काले कारनामों में हम क्यों उसके भागीदार बनें? अपराधी के साथ मिल जाना तो स्वयं भी अपराधी बनना है। लौकिक रूप में भी शान्ति भंग करने वाले अपराधी ठहराए जाते हैं अत: इस प्रकार से अशांति फैलाना अथवा वातावरण को दूषित करना, ईश्वरीय सरकार के नियमानुसार भी एक अपराध ही तो है। इन सबसे भी बड़ी बात तो यह है कि निन्दा सुनते रहने वाले का आज नहीं तो कल पतन अवश्य होता है। उसकी अवस्था में जरूर अंतर पड़ता है। मान लीजिए कि एक निन्दक किसी प्रमुख पुरुषार्थी के बारे में कहता है कि वह तो क्रोधी है अथवा अन्य विकार से ग्रसित है। इस बात को सुनते-सुनते श्रोता के मन में आज नहीं तो कल यह भाव पैदा होगा कि यदि प्रमुख लोग भी ऐसी धारणा वाले हैं तो फिर यदि हमने भी कोई भूल कर ली तो क्या फर्क पड़ता है। ऐसा सोचकर उसका अपना पुरुषार्थ ढीला हो जाएगा। इस प्रकार निन्दा उसे गिराने के निमित्त बनेगी।

इसका उपाय

अत: अच्छा यह है कि यदि कोई हमसे किसी की निंदा करता भी है तो हम उसे कहें कि हमसे यह कहने का आप का प्रयोजन क्या है? हम तो स्वयं भी अभी पुरुषार्थी हैं। इस प्रकार तो आप हमारी कमजोरियां देखकर दूसरों के सामने हमारी भी निन्दा करेंगे। ऐसा तो संसार में कोई भी मनुष्य नहीं जो हर दृष्टिकोण से संपूर्ण हो। अत: आप इस दलदल में फंसते ही क्यों हो? उस व्यक्ति की निंदा करके आपको क्या मिलेगा? यदि आप उसका भला चाहते हो तो आपको यह बात उन्हीं लोगों से कहनी चाहिए जो उसे शिक्षा देकर अथवा समझा कर ठीक कर सकें और यदि आप उसका भला ही नहीं चाहते बल्कि केवल उसे बदनाम ही करना चाहते हैं तब तो स्वयं भी आप पुरुषार्थ और मर्यादा के विरुद्ध मार्ग अपना रहे हैं जिस पर हम तो जाना नहीं चाहते। इससे, उससे, सबसे इस प्रकार की चर्चा करने से तो यह सिद्ध होता है कि आप उस व्यक्ति को सबकी दृष्टि में गिराना चाहते हैं और यदि वह बुरा न भी हो तो उसे बदनाम कर-कर के बुराई के मार्ग पर धकेलना चाहते हैं। ऐसे कार्य में हमें सम्मिलित करने की तो आशा ही व्यर्थ है। इस प्रकार न्याय संगत बात कहकर और मर्यादा जतला कर, पुरुषार्थ का सही मार्ग दर्शा कर हमें निंदक का भी मनोपरिवर्तन करना चाहिए। उसे भी इस विकर्म से बचाने का यत्न करना चाहिए।

हमारा एक और कर्तव्य

हमें यह समझ लेना चाहिए कि आज के इस युग की एक विशेषता ही यह है कि स्थान-स्थान पर निन्दा, तिरस्कार, अपमान और दोषारोपण ही का वातावरण बना हुआ है क्योंकि मनुष्य के मन, वचन, कर्म पर ईश्वरीय ज्ञान का अंकुश नहीं है और योग भी प्राय: लुप्त है। रामायण में मंथरा और काने धोबी जैसे एक-दो व्यक्ति ही निन्दक के रूप में दर्शाए गए हैं जो घरों को उजाड़ने वाले और संसार में मातम अथवा दुख की लहर फैलाने वाले हैं। महाभारत में शिशुपाल जैसों के स्वभाव की बात आती है। परंतु आज तो आपको ऐसे बहुत ही

व्यक्ति मिलेंगे। रामायण और महाभारत से स्पष्ट है कि सीता जैसों पर भी दोष लगाए गए और राम तथा कृष्ण की भी निन्दा की गई। वृद्धावस्था में महात्मा गांधी द्वारा प्रार्थना सभा में रामधुन करने के लिए जाते समय अपनी पोतियों के कन्धों का सहारा लेने की बात को लेकर भी लोगों ने उनकी खूब निन्दा की थी। इस प्रकार कई लोगों का तो धन्धा ही निन्दा करना है। अत: अब तो इस वातावरण का अन्त ही होना है।

आज तो निन्दा और विरोध का ऐसा वातावरण है कि यदि निन्दक को केवल मित्र ही मान कर चला जाए तो निन्दक लोग ईर्ष्या और द्वेष के वशीभूत होकर किसी अच्छे से अच्छे समाज को भी लोगों की दृष्टि में घटिया सिद्ध करने में कोई प्रयत्न नहीं छोड़ेंगे। वे अच्छी संस्थाओं को कोई कार्य भी नहीं करने देंगे। हमने देखा है कि कुछेक लोगों द्वारा निन्दा किए जाने के कारण आज तक कितनी कन्याओं-माताओं को ईश्वरीय ज्ञान सुनने का अवसर भी नहीं दिया जाता रहा और कितनों पर अत्याचार किया जाता रहा है। और भी कितने ही लोग मिथ्या निन्दा के कारण संस्था से दूर हो गए और इस प्रकार प्रभु-मिलन जैसे सर्वोत्तम लाभ से भी वंचित रहे। अत: कलुषित मन वाले, समाज विरोधी तत्वों की निन्दा की मुहिम के सामने हाथ पर हाथ रखकर बैठना भी अकर्मण्यता दोष ही है। हमें ज्ञान-बल, योग-बल और नैतिक-बल से ऐसे लोगों को सच्ची राह पर लाने का पुरुषार्थ करना होता है और सात्विक विधि-विधान से तथा श्रेष्ठ प्रचारात्मक तरीकों से उनके मिथ्यावाद से ईश्वरीय सन्देश को अधिक बुलन्द करना होता है। हमें ईश्वरीय ज्ञान की श्रेष्ठता को प्रभावशाली रीति से जन-जन के सामने रखते हुए माया-जनित प्रयत्न का सामना करना होता है। अपने आचरण और व्यवहार की उत्तमता से, संगठन और सेवा के साधन से हमें रचनात्मक तरीके से निन्दा नामक इस प्रदूषण के लिए उपाय भी करना ही पड़ता है। जैसे पौधा लगाने वाले माली को नाशकारी पंछियों, कीटों तथा झाड़-झांकड़ से उसकी रक्षा भी करनी होती है, वैसे ही रक्षा किसी सामाजिक किंवा धार्मिक संस्था रूपी पौधे के लिए भी जरूरी होती है। निस्सन्देह निन्दा करने वाले व्यक्तियों के प्रति हमें शान्तभाव एवं भ्रातृत्व को नहीं छोड़ना परन्तु उनके सुधार एवं उनके मिथ्या प्रचार के लिए भी योग सम्मत विधियों को अपनाना होता है। हमें गुण-ग्राहक बनकर हर एक से गुण तो लेना ही है परन्तु दूसरों के लिए भी गुण लेने का रास्ता साफ करना होता है। संसार में माया जो मानवी माध्यम लेकर ईश्वरीय संगठन का विरोध करती है उसके आक्रमण से स्वयं भी बचकर रहना होता है तथा अन्य प्रभु-प्रेमियों को भी सहयोग देना होता है। इसके लिए कई बार समाज द्वारा जुटाए गए वैधानिक उपायों का भी प्रयोग करना होता है ताकि संसार में अपराध न बढ़े। आसुरी दल का सामना करने के लिए दृढ़ता का प्रयोग करना होता है।

निन्दा और मूल्यांकन में अंतर

हमें यह भी समझना चाहिए कि निन्दा और मूल्यांकन में बहुत अन्तर है। मूल्यांकन करने वाला व्यक्ति गुण-दोष सामने लाकर स्वयं भी गुण लेना चाहता है और दूसरे की उन्नति की शुभ कामना करते हुए उसके कार्य के दोष उसके सामने रखता है। वह विध्वंसात्मक नीति-रीति को नहीं अपनाता और घृणा या उत्तेजना को बढ़ावा नहीं देता। परंतु जिसका लक्ष्य निंदा हो, उसका सारा कार्य-कलाप ही इससे उलट होता है। हमें ऐसी नफरत फैलाने वाले संहारक तत्वों का अपने आत्म-बल से तथा सभी प्रकार की सात्विक युक्तियों से और विधि-विधान से भी सामना करना होता है ताकि सभी सही अर्थ में ऐसे मित्र बन जायें जैसे सतयुग में होते हैं। विकर्म करके, माया के वशीभूत होकर ही हमारे अनेक मित्र ना हों बल्कि भ्रातृत्व से सहयोग एवं सुझाव देने वाले मित्र हों। इसके लिए सभी को सद्बुद्धि मिले, हमें ऐसी शुभकामना भी करनी चाहिए और उन्हें ईश्वरीय बुद्धि प्राप्त कराने का यथा-संभव प्रयत्न भी करना चाहिए और उसके बाद उनके अपने ही कर्मों के अनुरूप उनके भाग्य पर छोड़ देना चाहिए। ■■■

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

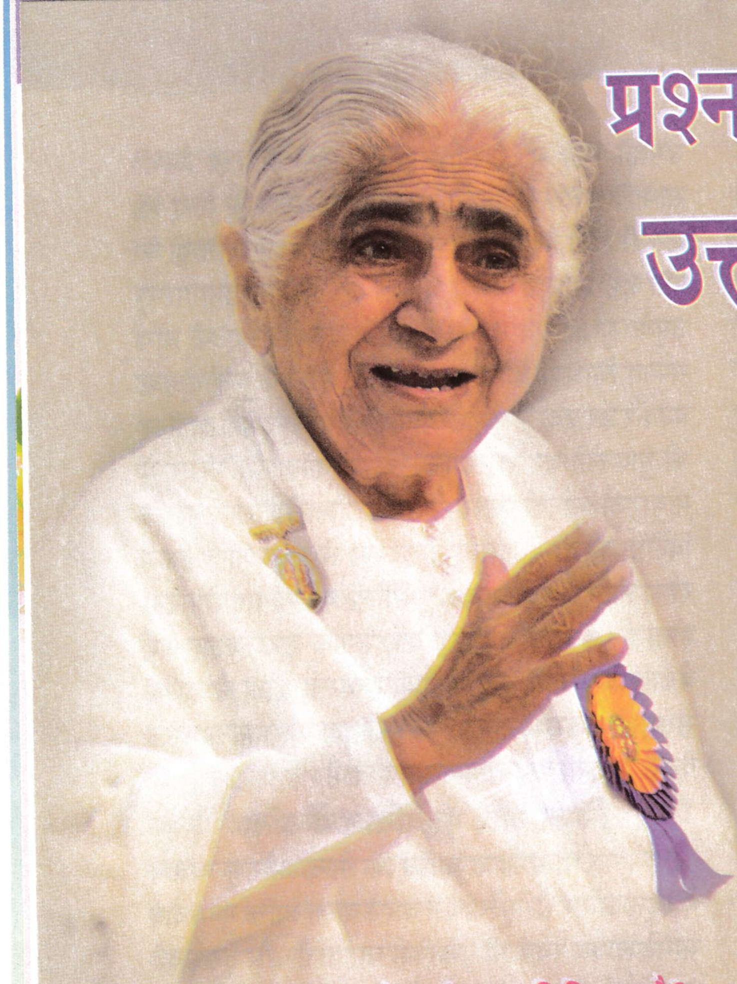

प्रश्न- सहज राजयोग की सहज विधि क्या है?

उत्तर- बाबा ने हम सबको अपना बनाके मुस्कराना सिखा दिया इसलिए बाबा का जितना शुक्रिया करो, उतना कम है। बाबा की इस युक्ति से ही हमारी जीवनमुक्ति हो गयी। बाबा की दृष्टि और बोल कितने प्यारे हैं। बाबा कहते, तुम मेरे आशिक हो, मैं तुम्हारा माशूक हूँ। हम तो कहते हैं, तुम हमारे मात-पिता, शिक्षक, सखा, सतगुरु हो। बाबा मेरा माशूक भी है। उसमें क्या ऐसी विशेषता है जो इतने सब आशिक एक माशूक को याद करते हैं। बाबा का एक-एक शब्द कितना प्यारा है। यही सहज राजयोग है। बाबा के दो शब्दों से ही मन शान्त, तन शीतल हो जाता है।

बाबा कहते, धीरज धर मनुआ, तेरे सुख के दिन आयेंगे। बाबा की कितनी बातें सुनाऊँ, डायरेक्ट बाबा से ही सुना है। आत्मायें बाबा का सुनाया हुआ सुनायेंगी परन्तु बाबा ने जो सुनाया डायरेक्ट, उससे कान खुल गये, आँखें खुल गई। दिल में दिलाराम बैठ गया। दिलवाला बाबा को जो जानते हैं, मानते हैं, पहचानते हैं, वो सबके दिलों को समझने वाले होते हैं।

अन्दर से धीरज रखना नहीं पड़ता है, पर धीरज अपने आप काम करता है। लाइफ में धीरज रखा है तो गिनती करके देखो, कितनी बातों से इज़ी पास हो गये हैं। कभी नहीं कहा होगा, मैं क्या करूँ? कैसे करूँ? बाबा कहेगा, मैं बैठा हूँ। यह जो निश्चय है ना, वही कमाल करता है। बुद्धि निश्चय वाली हो, बुद्धि में कभी कोई डाउट न उठे। संशयबुद्धि विनश्यन्ति, निश्चयबुद्धि विजयंती। तो बुद्धि से देखो, निश्चयबुद्धि कितना हूँ? बाबा कहता है, एक-एक बच्चा मेरा नूरे रत्न है। बाबा के नूर ने हमको पत्थर से हीरा बना दिया है। हीरे की कितनी बड़ी वैल्यू है।

बाबा कहते हैं, मेरे बच्चे पाँच विकारों की माया को जीतो तो मैं तुम्हें जगत का मालिक बना दूँगा। मायाजीते जगतजीत। लोभ, मोहवश थोड़ी भी माया पदभ्रष्ट कर देती है। पद ऊंचा पाना हो, गले का हार बनना हो, तो बाबा के पास आकर बैठ जाओ, इसमें कितना मजा है। सतगुरु की श्रीमत सिरमाथे पर है। यह माथा और दुनियावी माथे में फर्क है क्योंकि इस माथे पर कोई बोझा नहीं है। अगर माथे पर बोझा हो तो सिर के साथ सारे शरीर में भी दर्द होता है। यहाँ न कोई बोझ है, ना ही कोई दर्द है।

प्रश्न- बाबा के साथ हर सम्बन्ध की अनुभूति का सारांश सुनाइये?

उत्तर- अभी दो मिनट शिवबाबा के साथ हर सम्बन्ध का अनुभव करो, बाबा मेरी माँ है, मेरा बाप है, मेरा टीचर है, मेरा सखा है...। हर सम्बन्ध के प्रमाण श्रीमत पर चलना है। हर सम्बन्ध की अपनी प्राप्ति होती है। चेक करो और 1-2 मिनट के लिये बाबा के साथ सर्व सम्बन्ध

इमर्ज करो क्योंकि जैसे बताया है कि मुझे बाबा के साथ सखा रूप का अनुभव नहीं होता था। यह बात दीदी को बतायी क्योंकि दीदी का बाबा से सखा रूप का सम्बन्ध बहुत अच्छा था। दीदी ने बाबा को बताया। उस दिन से बाबा ने मुझे सखा रूप की भासना ऐसी दी जो दिल से यह प्रश्न ही पूरा हो गया क्योंकि इस सम्बन्ध में चाहिए वफादारी। बच्चे हैं तो आज्ञाकारी, कारोबार में ईमानदारी। कभी ऐसा विचार तो नहीं चलता है कि क्या सब मुझे ही करना है? आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार फिर है फरमानबरदार। जो फरमान मिले तैयार, एवररेडी। जिसकी जो ड्यूटी है, जिसका जो कार्य है, उस आत्मा को करना ही है, वो भी अच्छी तरह से करना है, एक्यूरेट करना है।

आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार आत्मा अपने आप बड़ों के आगे जायेगी। मुझे 2-4 दिन से लगातार फीलिंग आ रही है कि बाबा ने साकार में इतनी सेवा की, फिर अव्यक्त हुआ तो गुलजार दादी को निमित्त बनाकर भी कितनी सेवायें की और अभी भी अव्यक्त रूप से सेवायें हो रही हैं। अभी हमारी भी ऐसी अव्यक्त स्थिति हो जो बाबा के समान सेवा करें। इसके लिए पहले चाहिएँ त्याग, तपस्या फिर सेवा। जो बात ठीक नहीं है, उसे सेकण्ड में त्याग कर दें। न वो मुझे खींचे, न मैं उससे प्रभावित रहूँ।

प्रश्न- हमारा स्वभाव कैसा हो ताकि सब हमारे से सन्तुष्ट रहें?

उत्तर- पहले मैं पूछती हूँ, मेरा स्वभाव ऐसा तो नहीं है जो मेरे साथ किसी को चलना मुश्किल हो जाये। मैं आपको पूछती हूँ, मेरे साथ चलने में कभी कोई तकलीफ हुई है? पुराने जानते हैं। लक्ष्य रखना है कि हमें अभी ही कम्पलीट बनना है, तो हमें किसी से कोई कम्पलेंट न हो क्योंकि टाइम विनाश का सामने खड़ा है। पहले जब हम यह कहते थे तो दुनिया वाले चिढ़ते थे कि इन्हें और कुछ बोलने को नहीं आता है, सिर्फ कहती रहती हैं कि विनाश होने वाला है।

आपस में मिल करके चलने के संस्कार हैं तो सबके लिये अच्छा होता है क्योंकि वे सतयुगी संस्कार हैं। अभी बनना है फरिश्ता, सतयुग में बनेंगे देवता। फरिश्ते की लाइफ ऐसी हो जो और किसी बात से रिश्ता नहीं है। देह से भी न्यारे हैं, देह के सम्बन्ध से भी न्यारे हैं। जो सीन पास हुई, ड्रामा। बाबा के साथ की शक्ति मुझे चला रही है। बाबा ने मुझे अव्यक्त नाम दिया मनोहरशान्ता परन्तु फिर भी बाबा जनक के नाम से ही बुलाता था। एक बार तो बाबा ने कहा कि जनकराज यहाँ आओ। जनक माना ट्रस्टी और विदेही। नाम से काम नहीं है पर नाम का काम है ट्रस्टी होकर रहना और अन्दर प्रैक्टिस रहे विदेही बनने की।

जो सतयुग में आने वाली आत्मायें हैं उनको बाबा जल्दी खींच रहा है। बाबा कहता है, कभी किसी के नाम रूप में न फंसना, न फंसाना। नाम शरीर का निमित्त मात्र है, काम हम सबका एक है। वन्डर तो यह है। क्या काम है? त्याग पहले, जिससे तपस्या ऐसी हो जो कहेंगे, बाबा करा रहा है, हो जायेगा। धीरज का फल मीठा होता है। अगर बीज बो करके जल्दी-जल्दी करेंगे तो फल नहीं पायेंगे। किसी का भी अवगुण दिखाई ना पड़े। मेरे में कोई अवगुण है तो मेरी दिव्यता से वह भी चला जायेगा। बाबा तो बच्चों को रोज़ कहते हैं, मीठे बच्चे। मुझे और कुछ नहीं बनना है, मीठा बनना है। लेकिन इतने मीठे भी न बन जायें, जो मेरे ही बोल में कोई फंस जाये। ऐसा भी नहीं करना, सम्भालना अपने को। नॉर्मल रहना, निर्मल रहना स्वभाव में।

प्रश्न- निश्चय को मजबूत करने के लिए हमें क्या करना होगा?

उत्तर:- बुद्धि में निश्चय है तो कहेंगे निश्चयबुद्धि। मैं कौन हूँ, यह निश्चय हो। मैं आत्मा हूँ, आत्मा में मन, बुद्धि, संस्कार हैं। मन-बुद्धि अनुसार संस्कार बनते जा रहे हैं। हम यहाँ से संस्कार भर रहे हैं। पहले निर्वाणधाम में जाने और वापस सतयुग में आने के संस्कार अभी मन-बुद्धि से बना रहे हैं। ऐसे में अभी हमको यह नहीं कहना है, इनके साथ संस्कार कैसे मिलायें। रचता की रचना को देख दृष्टि दिव्य हो गयी है, बदल गयी है। हरेक को अनुभव होगा, बाबा ने पहले दृष्टि से अपना बनाके, अपने गले का हार बना दिया। तो यह भाग्य कम है क्या! बाकी इस संसार में वैराइटी संस्कार तो होंगे ही इसलिए सदैव रचता को देखो, तो सब अच्छा दिखने लगेगा। जैसे गीता का सार है ना, जो हुआ सो अच्छा, जो हो रहा है, वो भी अच्छा।

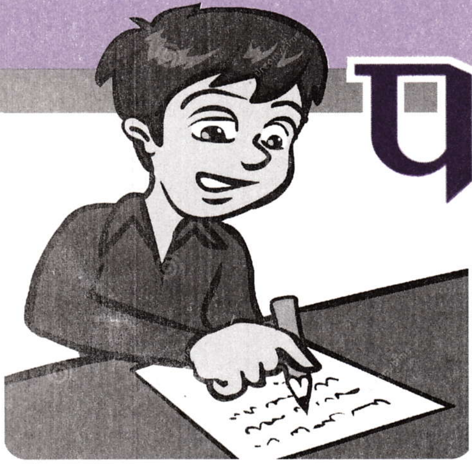

पत्र सम्पादक के नाम

''खुशी है अनमोल खजाना'' सितंबर, 2018 के संपादकीय लेख का पहला वाक्य ही ज्ञान-अमृत के समान है कि दूसरों को देह त्याग कर जाते हुए देखना और अपने को अमर समझना ही संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य है। खुशी बाजार में खरीदने का सामान नहीं है। जब हम अपने को शरीर समझेंगे तो सारे विकार साथ रहेंगे और खुशी गायब रहेगी। जब हम अपने को बिंदु आत्मा समझेंगे तो सारे विकार हम से दूर रहेंगे और हम खुश रहेंगे। खुशी से बढ़कर कोई खुराक नहीं जिसे हर कोई पाना चाहता है। पृष्ठ 29 का स्लोगन बहुत सुन्दर है, ''जिंदगी को खुश रहकर जियो क्योंकि रोज शाम सिर्फ सूरज ही नहीं ढलता, आपकी अनमोल जिंदगी भी ढलती है।'' लेख ''वर्तमान युग में राजयोग का स्थान'' में कहा गया है कि आज इन्सान की भौतिक आवश्यकतायें इतनी बढ़ गयी हैं कि वह मानसिक बोझ और तनाव में जीने को मजबूर है, जिसका एक ही उपाय है 'राजयोग'। कविता ''आया शिव भोला है, बाप की याद भुलाने से लगता माया का गोला है'' सराहनीय है। अन्य सभी लेख भी अच्छे हैं। सम्पादक मंडल को साधुवाद। आप इसी तरह ज्ञान-अमृत बरसाते रहें।

ब्रह्माकुमारी सरोज, बैरिया (बलिया)

सितंबर, 2018 अंक में ''क्या नारी ही नारी की शत्रु है या कोई और छद्म'' यह लेख बहुत ही सारगर्भित है। समाज में फैली विकृतियाँ जैसे सास-बहू के झगड़े, देवरानी-जेठानी के झगड़े, इनको अति सरल तरीके से उदाहरण देकर समझाया गया है और इनके निवारण हेतु जो मंत्र दिया है उसे पढ़ कर अवश्य ही हम समाज में फैले इन विकारों पर जीत प्राप्त कर सकते हैं। ''स्नेह की गागर'' में निस्वार्थ प्रेम को परिभाषित किया गया जो दिल को छू जाने वाला है। राजयोग का जो महत्व बताया गया है, अति जीवनोपयोगी है। संपादकीय ''खुशी है अनमोल खजाना'' का हर एक पैराग्राफ मन को असीम शांति देता है। ''मृत्यु से पहले पांच अनिवार्य कर्म'' यह लेख हमारी बुद्धि का ताला खोल देने वाला है। ज्ञानामृत, ज्ञान का तीसरा नेत्र खोलने की चाबी है। मैं पिछले तीन साल से राजयोग का अभ्यास और ज्ञानामृत पढ़ रहा हूँ। हरेक अंक को दोबारा पढ़े बिना रहा नहीं जाता। इसमें कई भाइयों का अनुभव पढ़कर हममें भी शक्ति, हिम्मत व विश्वास पैदा होता है।

हर दिल में फूल खिलाता ज्ञानामृत।
खुशियों की सौगात लेकर आता ज्ञानामृत।।
जीवन को नई राह दिखाता ज्ञानामृत।
हर पल हंसकर जीना सिखाता ज्ञानामृत।।

तिलक तेंदुलकर, केंद्रीय जेल (रायपुर)

मई, 2015 की पुरानी ज्ञानामृत पत्रिका मुझे मिली। मैंने पढ़ी। दूसरों को भी पढ़ायी। वे सब बड़े खुश हुए। एक लेख से बड़ी जोरदार सीख मिली है – 'जैसे कूड़ा जगह-जगह गिरा मिलता है तो बीमारी होती है, वैसे ही बुरी बातों को सबको बताने से वातावरण और संबंध भी बिगड़ जाते हैं।' मैं ज्ञानामृत का धन्यवाद करता हूँ। बड़ी अच्छी बात लिखी। काफी लोगों को जीयदान दिया है। मैं लेखक का जीवन भर आभारी रहूँगा।

प्रकाशचंद, पूर्व सैनिक (नई दिल्ली)

गुणवत्तापूर्ण ज्ञान से भरपूर ज्ञानामृत।
सात्विक, निर्मल, पवित्र ज्ञानदात्री ज्ञानामृत।।
गागर में सागर सदृश पत्रिका ज्ञानामृत।
मन को शांति, सुकून, सुख देती ज्ञानामृत।।
अखंड ज्योति-सी प्रज्वलित रहे ज्ञानामृत।
हर समस्या का समाधान बतलाती ज्ञानामृत।।
पाठक दिलीप की दिल से शुभकामनाएँ लो ज्ञानामृत।
हर माह अमृत की घूँट पिलाती रहो ज्ञानामृत।।

दिलीप भाटिया, रावतभाटा (राज.)

किसान दिवस पर विशेष:

किसान – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

■■■ **ब्रह्माकुमार नरेश, मुज्जफ्फरनगर**

एक बार शिवाजी के गुरु 'समर्थ रामदास' पैदल जा रहे थे। गर्मी के दिन थे, उन्हें प्यास लग आई। दूर-दूर तक कहीं पानी का स्रोत दिखाई नहीं दे रहा था परन्तु बगल में एक गन्ने का खेत था। गुरुजी ने खेत में जाकर एक गन्ना तोड़ा और उसे चूस कर प्यास बुझाने लगे। इसी बीच खेत वाले किसान की उन पर नजर पड़ गई। उसने उन्हें पकड़ कर पीट दिया। आस-पास के लोग इकट्ठे हो गए और किसान को पकड़ कर शिवाजी के दरबार में न्याय हेतु पेश किया गया। किसान को जब पता चला कि जिस चोर को उसने पीटा है, वे शिवाजी के गुरु 'समर्थ रामदास' हैं, तो वह डर से काँप गया। शिवाजी अपने सिंहासन पर बैठे थे और उन्हें उस किसान के अपराध के बारे में बताया गया। जब शिवाजी सजा सुनाने वाले थे तो उनके गुरु 'रामदास' ने उनसे कहा, 'शिवा, पीड़ित मैं हूँ इसलिए इसे सजा देने का अधिकार भी मुझे है।' शिवाजी ने कहा, 'आपकी जैसी मर्जी।' अब किसान घबराया कि सजा बहुत ही भयंकर होगी। गुरु रामदास ने सजा सुनाई, 'शिवा, इस किसान को पांच बीघा जमीन और दे दो।' शिवाजी व सभी दरबारी आश्चर्य में पड़ गए और बोले कि यह सजा सुनाई है या पुरस्कार दिया है ? समर्थ रामदास बोले, 'बेचारा किसान गरीब है, इसके पास बहुत कम जमीन है, जिसकी फसल से इसके परिवार का गुजारा हो नहीं पा रहा है, नहीं तो एक गन्ने के लिए यह मुझे क्यों पीटता ?' ऐसा न्याय वही कर सकता है जिसमें अहंकार न हो, जो रहमदिल हो और जिसमें गरीबों के प्रति सद्भावना हो। यदि 'समर्थ रामदास' जैसा एक भी सच्चा गुरु आज होता, तो वह किसानों की बदहाली दूर करने हेतु उनकी आवाज बन गया होता। अभी 'सर्वसमर्थ राम (शिव) के दास अर्थात् सेवक (हनुमान)' बन गए ब्रह्माकुमार-कुमारियां किसानों की मुश्किलें दूर करने हेतु प्रयासरत हैं और सहज राजयोग का ज्ञान इसमें सहायक है।

अभाव सद्भावना व सदाचार का

आजादी के बाद सन् 1950-51 में देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 51 प्रतिशत था, जो सन् 1970 में घटकर 43 प्रतिशत रह गया। यह सन् 2017-18 में घट कर लगभग 16 प्रतिशत रह गया है क्योंकि सरकार ने सेवा-क्षेत्र व औद्योगिक उत्पाद को जितना बढ़ावा दिया है, उतना बढ़ावा कृषि-क्षेत्र को नहीं मिला। भारत के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 47 प्रतिशत भाग कृषि-भूमि है। कुल निर्यात में कृषि का योगदान 14 प्रतिशत है। देश की जनसंख्या के 70 प्रतिशत मनुष्य अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर हैं। कुल कृषि-भूभाग का 60 प्रतिशत हिस्सा सिंचाई के लिए मानसून पर निर्भर है। किसान तो मानसून को 'ईश्वर की मर्जी' या कृपा ही मानता है। किसान तीन प्रकार के हैं - 1. सम्पन्न बड़े कृषक, 2. लघु व सीमान्त कृषक 3. भूमिहीन खेतिहर श्रमिक। प्रथम व द्वितीय प्रकार के किसान 12 करोड़ हैं और तीसरे प्रकार के खेतिहर मजदूर 14 करोड़ हैं। लघु व सीमान्त कृषक एवं भूमिहीन खेतिहर श्रमिक आज त्रस्त व पस्त हैं। वे परिवार को पालने के लिए संघर्षरत हैं। उनके सशक्तिकरण हेतु चर्चाएं तो खूब होती हैं, सरकार के द्वारा आर्थिक मदद की योजनाएं भी लायी जाती हैं, परन्तु सद्भावना व सदाचार के अभाव में योजनाएं भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ जाती हैं। यह चौंकाने वाली बात है कि सन् 2011 को

समाप्त हुए दशक में 90 लाख किसानों की संख्या कम हुई थी। वे कृषि छोड़ कर शहरों में पलायन कर गए थे। गांवों से शहरों में पलायन के दो कारण हैं– 1. शहरी आकर्षणवश या 2. खेती की बढ़ती लागत से लाभ की उम्मीद न होने के कारणवश। एक व्यक्ति ने स्वामी विवेकानन्द से पूछा, 'सब कुछ खोने से ज्यादा बुरा क्या है ?' स्वामीजी ने जवाब दिया, 'वो उम्मीद खोना, जिसके भरोसे पर हम सब कुछ वापस पा सकते हैं।' उम्मीदों से बंधा एक लाचार परिन्दा है किसान, जो घायल भी उम्मीदों से है और जिन्दा भी उम्मीदों पर है।

खेती है मूल पेशा

परमात्मा ने अपनी विशेष रचना 'मनुष्य' के लिए अन्न के उत्पादन की जिम्मेवारी किसान, कृषक, खेतिहर, अन्नदाता, भूमिजीवी आदि नामों से पुकारे जाने वाले मनुष्यों को दे रखी है। विश्व के सभी पेशों में खेती करना सबसे पुराना 'मूल पेशा' या 'कुदरती पेशा' है। परमात्मा रूपी किसान हर 5000 साल पर आकर ऐसा सतयुगी खेत तैयार कर जाता है जिसमें 84 पीढ़ी तक मनुष्य रूपी फसल पैदा होती रहती है, हालांकि पीढ़ी दर पीढ़ी गिरावट आती जाती है। जिस प्रकार एक माता शिशु को जन्म देकर उसकी सेवा तब तक दिन-रात करती है जब तक कि वह शिशु चलना व बोलना नहीं सीख लेता, उसी प्रकार एक किसान खेत में बीज बोकर उसकी सेवा तब तक दिन-रात करता है जब तक कि फसल पक कर, कट नहीं जाती। माता सन्तान के लिए सब कुछ सहन करती है और किसान भी अपनी फसल के लिए सर्दी-गर्मी-बरसात आदि सब कुछ सहन करता है। माता को अपनी सन्तान का बिछोह दुख देता है, तो किसान को अपनी फसल का पक कर बिक जाना, उससे बिछोह होना सुख देता है। वह तो जीवन-पर्यन्त हर फसल के बाद बीज बचाता रहता है और बेफिक्र रहता है कि खेत व बीज मेरे पास है, समय पर भगवान जल दे ही देता है, फिर चिन्ता किस बात की ! परन्तु अब सब कुछ इतना आसान नहीं रहा। जिस प्रकार बार-बार बीज बचाने से बीज की गुणवत्ता कम होती जाती है और बार-बार दही का जामन बचाते रहने से दही खट्टा हो जाता है, उसी प्रकार, बार-बार पुनर्जन्म लेते-लेते मनुष्यात्मा के गुण कम होते जाते हैं और उसका जीवन खट्टा होता जाता है। आज आदि मौलिक गुण तो सभी मनष्यों के लुप्त हो गए हैं परन्तु सर्वाधिक खटास किसान के जीवन में आई है।

मूलभूत आवश्यकताओं का दाता किसान

शिशु जन्मते ही रोता है और मां दूध पिलाती है तो वह चुप हो जाता है। मां जो अन्न खाती है, उससे यह दूध बनता है और यह अन्न किसान पैदा करता है। तो शिशु हो या बालिग नर-नारी, सभी के भोजन का प्रबन्ध किसान करता है। जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताएं– रोटी, कपड़ा और मकान को उपलब्ध कराने में प्रत्यक्ष या परोक्ष हाथ किसान का ही होता है। गेंहू (रोटी), कपास (कपड़ा) व मकान की ईंटें किसान के खेत से ही निकलती हैं। भवन-निर्माण में लगे मजदूर भी अक्सर किसान के परिवार से ही आते हैं। यदि समाज में किसान नहीं होता तो सोचा जा सकता है कि मूलभूत आवश्यकताओं से वंचित समाज की क्या स्थिति होती ! परन्तु यह किसान आज के समाज का सबसे उपेक्षित, सबसे त्रस्त और दुर्गति में फंसा प्राणी है।

गुमान से परे, ईश्वर की तरह गुमनाम

एक बार किसी वैज्ञानिक ने परमात्मा से कहा कि हमें सब कुछ बनाना आ गया है। यहां तक कि हम प्रयोगशाला में किसी भी जीव का कोई भी अंग उत्पन्न कर सकते हैं और अब हमें आपके ऊपर निर्भर रहने की जरूरत नहीं। परमात्मा ने मुस्करा कर कहा कि कुछ उत्पन्न करके मुझे भी दिखाओ। वैज्ञानिक ने उत्साह के साथ एक कांच के पात्र में पहले थोड़ी मिट्टी डाली। परमात्मा ने कहा, जरा ठहरो, यह मिट्टी तो मेरी बनाई हुई है, पहले तुम अपनी मिट्टी बनाओ। तुम मेरी किसी भी चीज का उपयोग न करके जल, मिट्टी आदि अपनी तैयार करो, फिर जो उत्पन्न करना है करके दिखाओ। वैज्ञानिक से कुछ कहते न बना और लाचारी में हाथ जोड़ दिए। किसान किसी भी वैज्ञानिक से बड़ा वैज्ञानिक है, क्योंकि वह मिट्टी से अनेक प्रकार की भोज्य सामग्री पैदा करते हुए भी कभी 'वाह रे मैं' के गुमान में नहीं आता और परमात्मा की तरह गुमनाम रहता है। जीवात्मा के हर जन्म में उसके शरीर हेतु भोज्य पदार्थ की आपूर्ति किसान

के द्वारा होती है और जन्म-दर-जन्म आई गुणात्मक गिरावट की भरपाई कल्प के अंत में 'ब्रह्मा' के द्वारा होती है। तो ब्रह्मा और किसान, ये परमात्मा की विशेष रचना हैं। ब्रह्मा, ब्राह्मण रचते हैं तो किसान, अन्न रचता है ; ब्रह्मा शिव बाबा का साकार रथ है तो किसान उस रथ के ईंधन का उत्पादक है; ब्रह्मा अन्तर्जगत का पुरुषार्थी है तो किसान बाह्य जगत का पुरुषार्थी है; ब्रह्मा को भक्तों के द्वारा पूजा नहीं जाता, तो किसान भी अन्न के उपभोक्ताओं के द्वारा कभी सम्मान नहीं पाता।

महापुरुषों की जड़ें ग्रामीण भारत में थी

कविवर सुमित्रानन्दन पंत ने एक कविता में लिखा है, ''है अपना हिन्दुस्तान कहाँ, यह बसा हमारे गाँवों में।'' उस समय जनसंख्या का लगभग 75 प्रतिशत भाग गाँवों में निवास करता था। वृहद्-संहिता व आर्यभट्ट-संहिता के रचयिता महर्षि आर्यभट्ट; लीलावती ग्रंथ के रचयिता महर्षि भास्कराचार्य; महर्षि ब्रह्मगुप्त; बोद्धायन-प्रमेय के रचयिता महर्षि बोद्धायन; माधवाचार्य आदि विद्धान महापुरुषों की जड़ें ग्रामीण भारत में थीं। गाँवों के शुद्ध अन्न, शुद्ध जल, शुद्ध वायु और शुद्ध वातावरण ने ऋषि-मुनियों को तैयार किया। शहरी परिवेश में जन्मे, पले-बढ़े व्यक्ति को तपस्या के अनुकूल संस्कार कम ही मिलते हैं। देश की सारी अर्थव्यवस्था का केन्द्र गाँव हुआ करते थे और गाँवों के सारे कुटीर उद्योगों के प्राण कृषि व कृषक में बसते थे। अत: यह कहा जाता था कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है। भारतीय संस्कृति और सभ्यता यदि कहीं बची है तो केवल गाँवों में। परन्तु कई गाँवों में तो इसके मात्र अवशेष ही बचे हैं। पहले के गाँवों में 18 प्रकार के कुटीर उद्योग थे और सभी अपनी जरूरतें अपने-अपने उत्पाद के आपसी लेनदेन से पूरी करते थे अर्थात् गाँवों में बार्टर-सिस्टम (वस्तु विनिमय) था। कुटीर उद्योगों में बने सामान को बाहर शहरों में बिकने के लिए भेजा जाता था। शहर, गाँवों से ही अस्तित्व में आए और शहरों की आवश्यकताएं भी ग्रामीण कुटीर उद्योग और कृषि-उत्पादन के माध्यम से पूरी होती थीं। किसान को कुदरती व प्राकृतिक नियमों की गहरी समझ तो होती ही है, साथ ही वह शरीर को खेत में खपाता-तपाता भी है। वह तो निवृत्ति मार्ग के तपस्वियों से बड़ा तपस्वी है क्योंकि वह प्रवृत्ति में रहते हुए तपस्वी जैसा जीवन जीता है। अच्छी फसल के लिए वह ईश्वर को पुकारता है। परन्तु ईश्वर के यथार्थ स्वरूप, उसके कर्तव्य और उससे सम्बन्ध से अन्जान किसान आज ईश्वर से बिछुड़ गया है, अत: त्रस्त है।

मानव सभ्यता का अमानवीय स्वरूप

पूर्व अमेरिकी सिनेटर व राजनीतिज्ञ डैनियल वेबस्टर के अनुसार, ''हमें नहीं भूलना चाहिए कि मानव-श्रम से ही पृथ्वी पर सभ्यता का विकास हुआ है। जब कृषि शुरू हुई, तब अन्य कलाएं भी निकलीं। अत: किसान मानव सभ्यता के संस्थापक हैं।'' आज की यह कैसी मानव-सभ्यता है जिसका अमानवीय-स्वरूप अपने संस्थापक किसान के अस्तित्व पर भारी पड़ रहा है ! आज प्रकृति के तत्व विद्रोही हो गए हैं, मानो उनसे अपने निकटतम सहयोगी 'किसान' की व्यथा देखी नहीं जा रही हो। अतिवृष्टि, सूखा, पेयजल का अभाव, दावाग्नि, भूकम्प, अंधड़ आदि का परोक्ष सम्बन्ध व्यथित किसान की आहत भावनाओं से भी हो सकता है। यह आध्यात्मिक नियम भी है कि जैसे मनोभाव व वृत्ति-दृष्टि मनुष्य (किसान) की होती है, वैसा ही वातावरण उसके इर्द-गिर्द बन जाता है।

यदि यह कहा जाए कि वर्तमान समय में फसल उगाना 'टिमटिमाती आशाओं की ज्योत को बुझने न देने का पेशा है', तो गलत नहीं होगा। कृषि जितना अनिश्चित पेशा दूसरा कोई नहीं। किसान के द्वारा खेत और वातावरण में हरियाली बिखेरी जाती है, बावजूद इसके कि उसके जीवन की हरियाली वर्ष-दर-वर्ष बिखरती जा रही है और उसकी खुशहाली के लिए कोई भी जागरूक नहीं। कृषि की आज जैसी बदहाली इतिहास में कहीं वर्णित नहीं मिलती क्योंकि आज उत्पादन (फसल) जहरीला है, उत्पादक (किसान) लुटा हुआ है, खेत-उपवन उर्वरकता खो चुके हैं और पूरे कृषितंत्र को मानो लकवा मार गया है। भूतपूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटन यदि आज भारत में होते, तो यह कभी न कहते कि 'कृषि सर्वाधिक स्वास्थ्यवर्धक, उपयोगी और उत्कृष्ट पेशा है।'

■■■

परीक्षा के भय से मुक्ति

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

बड़े बुजुर्गों ने कहा है कि नींद, भय तथा भूख को जितना बढ़ाओ, बढ़ जायेंगे; जितना घटाओ उतना घट जाएंगे। भय चाहे कोई भी हो; परीक्षा का हो, व्यक्ति का हो, अन्धेरे का हो, निराधार ही होता है। भय का कोई अस्तित्व नहीं होता है, उसका निर्माण हम करते हैं।

एक कहानी सुनी होगी। एक व्यक्ति पहाड़ी जगल में भटक गया। रास्ता नहीं मिल रहा था। खोजते-खोजते रात हो गई। खड़ी पहाड़ी थी। अचानक ठोकर लगी और फिसलने लगा। फिसलते-फिसलते शरीर में खरोंच भी आई परन्तु क्या करे। अचानक एक पेड़ की डाल उसके हाथ में आई और उसे पकड़कर लटक गया। भगवान को पुकारने लगा कि बचाओ। तभी उसे आवाज आई, बच्चे, हाथ छोड़ दो परन्तु वह डरा हुआ था। अन्धेरे में कुछ दिख नहीं रहा था। उसने सोचा, छोड़ दूँगा तो कहीं नीचे गहरी खाई हो और गिर जाऊँ। उसकी वह रात बड़ी कष्ट में बीती। हाथ दुखते रहे पर प्राण बचाने थे तो और कोई चारा नहीं था। सुबह की थोड़ी-सी रोशनी हुई तो देखा कि पाँवों से एक फीट नीचे सुरक्षित धरती है। उसे बड़ा अफसोस हुआ कि कितना अच्छा होता, मैं हाथ छोड़ देता, यूँ ही रात भर परेशान रहा।

कहानी का सार क्या है? यही कि समाधान में और हमारे में एक फीट की ही दूरी है परन्तु भय के वश हम उसे दुर्लभ समझ लेते हैं और अलभ्य मान लेते हैं। परीक्षा का भय भी ऐसा ही है।

परीक्षा बिना नहीं मिलेगी अगली कक्षा

यदि हम विद्यार्थी हैं तो परीक्षा तो आएगी ही। यह तो निश्चित है। जिस दिन स्कूल में आए उसी दिन पता था कि एक दिन परीक्षा होगी। उसके बिना अगली कक्षा में जाना सम्भव नहीं। हर विद्यार्थी को परीक्षा देनी ही होती है चाहे वह पहली कक्षा का हो या पी.एच.डी.का। और फिर परीक्षा तो निश्चित पाठ्यक्रम (सिलेबस) में से आती है। वो पाठ्यक्रम (सिलेबस) हमने सारा साल पढ़ा होता है। उसको कई-कई बार दोहराया है, फिर भय क्यों? हाँ, यदि न पढ़ा हुआ आए तो चिन्ता हो सकती है। ऐसा तो विद्यार्थी सहन ही नहीं करते, वे ऐसी परीक्षा का बायकाट अर्थात् बहिष्कार कर देते हैं।

बिना चेतावनी आती हैं जीवन की परीक्षाएँ

बच्चो, जीवन की परीक्षा हमारी स्कूली परीक्षा से कई गुणा मुश्किल होती है क्योंकि उसमें न कोई निश्चित पाठ्यक्रम (सिलेबस) होता है और न यह निश्चित होता कि परीक्षा किस समय आएगी। जीवन की परीक्षा में कहीं से भी, कभी भी, कोई भी सवाल आ सकता है। लॉ की डिग्री लिए हुए एक बहन, किसी कम्पनी में लिगल एडवाइजर की पोस्ट के लिए इन्टरव्यू देने जा रही थी। जब वह रास्ते में थी, तब उसे फोन आया कि उसकी माँ की शुगर उच्च स्तर (हाई लेवल) पर पहुँच गई है और उसे हॉस्पिटल में एडमिट करवाया गया है। वह बहन वापस तो आ नहीं सकती थी। जैसे-तैसे इन्टरव्यू दिया। फिर समाचार मिला कि माँ चल बसी है। अचानक घटी इस दुखद घटना के कारण वह डिप्रेशन में चली गई। देखो बच्चो, जीवन की परीक्षा बिना चेतावनी आती है। क्या आपकी परीक्षा ऐसी है? नहीं ना। आपको तो सब मालूम है और पहले से तैयारी भी है। आपकी परीक्षा मात्र दो-तीन घन्टे ही तो चलती है, फिर आप फ्री हो जाते हो, फिर भय किस बात का! जीवन की परीक्षाएँ कितनी लम्बी चलेंगी, कुछ पता नहीं होता। कहा जाता है कि विद्यार्थी को पहले पढ़ाया जाता है बाद में परीक्षा होती है और जिन्दगी में पहले परीक्षा होती है फिर पाठ सीखने को मिलता है।

निखारती है परीक्षा

यदि कोई सेना में भर्ती होता है तो उसे पता होता है कि युद्ध में जाना ही पड़ेगा। यदि कोई खेत खरीदता है तो उसे पता है कि इसमें बीज बोना ही पड़ेगा। कहने का भाव यह है कि जैसे सैनिक और युद्ध, किसान और खेती का चोली-दामन का साथ है, उसी प्रकार, विद्यार्थी और परीक्षा का भी चोली-दामन का साथ है। मानव तो सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसके विवेक की उन्नति के लिए परीक्षाएँ अनिवार्य हैं। छोटे-छोटे कीड़े, पक्षी आदि भी

कड़ी परीक्षाओं में से गुजरकर ही अपने अस्तित्व और अपनी विशेषता की रक्षा करते हैं। इसलिए कहा जाता है कि परीक्षा सभी को निखारती है

कीड़े की परीक्षा

एक व्यक्ति जंगल में लकड़ी लेने गया। एक पेड़ पर उसे रेशम के कीड़े का ककून (Cocoon) दिखाई दिया जिसके ऊपरी भाग में छेद था। रेशम का कीड़ा उस छेद से बाहर आने के लिए कड़ी मेहनत कर रहा था। कुछ देर बाद कीड़े ने प्रयत्न करना छोड़ दिया। व्यक्ति को दया आई। उसने ककून काट दिया, कीड़ा बाहर आ गया पर उसका शरीर बेडोल, पंख छोटे और कमजोर थे। उस व्यक्ति ने सोचा कि कीड़ा अब उड़ेगा परंतु शाम तक वह कीड़ा असहाय ढंग से रेंगने के सिवा कुछ न कर सका। इसका कारण यह है कि कीड़ा, ककून के छेद से निकलने के लिए जब संघर्ष करता है तो उसके शरीर में स्थित द्रव्य उसके पंखों की जड़ों तक पहुँचता है जिससे पंख मजबूत होते हैं। देखिए, प्रकृति स्वयं अपनी रचना की परीक्षा लेती है। अत: विद्यार्थी जीवन में परीक्षाएँ अर्थहीन नहीं हैं। इनसे हमारा उत्कर्ष होता है।

पक्षी की परीक्षा

एक पक्षी-प्रेमी शिष्य ने एक दिन जंगल में देखा कि एक पक्षी घोसला बनाने के लिए पतरे तथा काँच के छोटे-छोटे टुकड़े और लोहे की बारीक कीलें इस्तेमाल कर रहा है। उसने अपने गुरु से इसका कारण पूछा। गुरु ने कहा, बेटा, तुम घोसले पर बराबर नजर रखो और देखो कि आगे क्या होता है। कुछ समय बाद घोसले में अंडा आ गया और फिर समय अनुसार बच्चा निकला। माता-पिता उसे खाने-पीने की सामग्री लाकर खिलाते। कुछ समय बाद बच्चे ने हलन-चलन शुरू किया परन्तु कांच और पतरों के टुकड़े उसके चलने में बाधक बन रहे थे। उसे पीड़ा भी हो रही थी। पीड़ा के कारण वह बार-बार उड़ने का प्रयास करता था। कुछ समय बाद बच्चा थोड़ा उड़ने लगा, घोसले से बाहर निकला और फिर उड़कर दूसरी जगह चला गया।

गुरु ने शिष्य को समझाया कि यदि बच्चे को नरम घोसला और दाना-पानी माँ-बाप से मिलता रहता तो वह कभी उड़ने का प्रयास ही न करता या देरी से उड़ना सीखता परन्तु काँच और पतरे की धार से बचने के लिए जल्दी उड़ना सीख गया।

प्यारे बच्चो, जैसे उस पक्षी को जल्दी उड़ना सिखाने के लिए उसके माँ-बाप ही उसके परीक्षक बने और अपने प्रयास में सफल भी हुए। इसी प्रकार, पढ़ाई के बाद आने वाली परीक्षा हमारे विकास के लिए अनिवार्य है। बिना इम्तिहान के यदि अगली कक्षा मिल जाए तो मानव आलसी हो जाएगा। परीक्षाओं का आयोजन हमारे प्रति कठोरता नहीं बल्कि सच्चा प्रेम है जो हमें आलस्य, मनमानी, लगाव और अकर्मण्यता से मुक्त करता है।

दृढ़ता की शक्ति

जीवन में सफलता के लिए दृढ़ संकल्प शक्ति की बहुत जरूरत होती है। मकान बनाने के लिए नींव में पत्थर बहुत अधिक कूटे जाते हैं। बार-बार हथौड़ी मारनी पड़ती है। पत्थर जितने बारीक बनते हैं, उतनी नींव मजबूत बनती है। इसी प्रकार बार-बार संकल्प रूपी हथौड़ी अन्दर मारनी पड़ती है कि मुझे अध्ययन करना है, तब लक्ष्य साकार होता है। यदि हम किसी बोर्ड पर एक बार लाइन खींचते हैं तो वह हल्की-सी दिखेगी लेकिन उसे पेन्ट या पैन्सिल से गहरा करते जाएँ, पैन्सिल फिराते जाएँ, पेन्ट फिराते जाएँ, तो बहुत गहरी हो जाती है, दूर से दिखाई देती है। इसी प्रकार, जब हम कोई संकल्प एक बार करते हैं और फिर उसे छोड़ देते हैं तो उसकी शक्ति भी कम रहती है लेकिन जब उसी संकल्प को मन में दोहराते रहते हैं, मुझे करना ही है, मुझे यह करना ही है, रात और दिन हमको वही बात दिखती रहती है कि यह करके ही छोड़नी है, जब तक यह होगी नहीं, मुझे चैन नहीं, मुझे करनी ही है, करनी ही है, इसको कहते हैं दृढ़ता। मान लीजिए, हमने एक बात सोची, फिर दूसरी की तरफ मन चला गया, फिर तीसरी की तरफ मन ललचा उठा कि यह भी करनी है, इसका अर्थ है कि अच्छी तो हमें सारी बातें लगती हैं लेकिन परिणाम यह निकलेगा कि हम कर एक भी नहीं पाएँगे क्योंकि हम स्थिर नहीं हैं, किसी एक पर एकाग्र नहीं हैं

'करना तो है' के बजाए 'करना ही है'

दृढ़ता की शक्ति से सम्पन्न विद्यार्थी का संकल्प होता है 'करना ही है।' इसकी भेंट में दूसरा संकल्प होता है, 'करना तो है।' 'करना ही है' यह भाव जहाँ होगा वहाँ सब कुछ सहने की, त्यागने की, छोड़ने की भावना होगी।

लेकिन जहाँ 'करना तो है' यह 'तो' शब्द आ गया तो इसका अर्थ है, मैं मना थोड़े ही कर रहा हूँ करने से? ऐसा थोड़े ही है कि मैं करूँगा नहीं। मैंने कब कहा कि मैं नहीं करूँगा? करना तो है ही ना। 'तो' आने से न कोई समय सीमा है, न कोई लगन है, बस कर लेंगे, कभी भी हो जायेगा। 'करेंगे' की बजाए 'करना ही है' यह संकल्प सफलता की ओर ले जाएगा।

संकल्प का बोझ

मान लीजिए, हम केवल संकल्प करते हैं और उसे साकार नहीं करते, तो संकल्प का भी बोझ होता है और वह बोझ सिर के अन्दर रखा रहता है, याद आता रहता है। हम पढ़ना चाहते हैं, गृहकार्य करना चाहते हैं, परीक्षा की तैयारी भी करना चाहते हैं और सोचते रहते हैं कि यह पाठ पढ़ना है, वो सवाल हल करना है, यह प्रयोग करके देखना है लेकिन हम करते नहीं हैं, पढ़ते नहीं हैं। इससे क्या होता है? सारी किताबें मस्तक पर रखी रहती हैं और हम बोझ में ही उठते हैं, बोझ में ही खाते हैं, बोझ में ही सारे काम करते हैं। अगर सोचा हुआ कर लें तो बोझ उतर जाये और आनंद की अनुभूति हो लेकिन हम कभी भी आनंद में नहीं रहते। हम पिकनिक करते हैं, दोस्तों के साथ घूमते हैं, टी.वी.भी देखते हैं, हँसी-मजाक भी करते हैं लेकिन भीतर से कभी भी आनंदित नहीं हैं। सपने में भी बोझ, जागृत अवस्था में भी वही बोझ। यह बोझ किसका है? केवल और केवल सोचने का। हम इस बोझ को लिये-लिये घूमते रहते हैं लेकिन अगर हम कार्य कर लें तो बोझ उतर जाये। तो हम संकल्प को पकड़ कर न रखें, उसको क्रियान्वित कर लें। हमारे ऊपर और कोई बोझ नहीं लेकिन अपनी ही सोच का बोझ होता है।

रोज का होमवर्क रोज निपटाएँ

यदि हम रोज थोड़ा-थोड़ा पढ़ते हैं तो परीक्षा के भय के लिए कोई स्थान नहीं रह जाता है। हम प्रतिदिन स्कूल में परीक्षा की तैयारी के लिए ही तो आते हैं। जो बच्चे रोज का होमवर्क रोज निपटाते हैं, उनके पास डर आ ही नहीं सकता। यहाँ हमें यह सोचना पड़ेगा कि विद्यार्थी जीवन के थोड़े-से वर्ष यदि घूमने-फिरने के आनन्द की भेंट चढ़ा देंगे तो आगे के साठ सालों में भारी खामियाजा भुगतना पड़ेगा। आनन्द कुछ साल का, आत्मग्लानि जीवन भर की अर्थात् पल भर का मजा, जीवन भर की सजा।

डर के कारण

- ✶ पढ़ाई को टालते जाने की आदत
- ✶ इस बात की अनभिज्ञता कि यह अपनी योग्यता दिखाने का मौका है।
- ✶ कइयों को चिन्ता होती है कि यदि बड़ों की अपेक्षा से कम मार्क्स आए तो?
- ✶ कई सोचते हैं, अन्तिम घड़ियों में कोर्स कवर कर लेंगे, वो अन्तिम घड़ियाँ कभी नहीं आती।
- ✶ गरीबी, बीमारी आदि की बाधा भी परीक्षा-भय का कारण बनती है।

भय को जीतने के तरीके

- विद्यार्थी जीवन की महिमा समझें, इसे सराहें।
- अध्ययन ही वह चाबी है जो समृद्धि के द्वार खोलने वाली है। अत: अध्ययन की योजना बनाएँ और दृढ़ता से उसे लागू करें। किताबों को मित्र बनाएँ, उन्हें पढ़ना माना उनसे बातें करना। अध्ययन का आनन्द लें।
- परीक्षा ही ज्ञान और योग्यता को प्रत्यक्ष करने का मौका है।
- समय को सही यूज करें, व्यर्थ न करें।
- केवल मार्क्स लेने के लिए नहीं बल्कि ज्ञान पाने और बढ़ाने के लिए पढ़ाई है, ऐसा समझें।
- कुछ समय योगाभ्यास करें, इससे स्मरण शक्ति और एकाग्रता बढ़ेगी।
- उठते ही भयंकर फिल्में न देखें और अखबार ना पढ़ें।
- सबसे अच्छे सम्बन्ध रखें। बड़ों को सम्मान दें, नम्र बनकर सबकी दुआएँ लें।

हमारे विचार ही हमें डराते हैं। हमारे विचार ही हमें निभर्य और सशक्त बनाते हैं। हम जो भी दृढ़तापूर्वक सोचेंगे या विश्वास करेंगे, वही सामने घटित होगा। हम अपने बारे में अच्छा सोचें कि मैं योग्य हूँ, मैं बुद्धिवान हूँ, मैं कर सकता हूँ, यदि मैं नहीं तो कोई भी नहीं कर सकता। यदि कई दूसरे कर सकते हैं तो मैं क्यों नहीं? हमेशा महसूस करें कि मैंने परीक्षा को विशेष योग्यता से पास कर लिया है। हमेशा आत्मविश्वास के साथ पढ़ें, चलें, सुनें और देखें। ■■■

पतन का जतन

■■■ ब्रह्माकुमारी गीता, शान्तिवन (आबू रोड)

आज तटस्थ होकर चारों ओर के संसार को देखते हैं तो लगता है कि हम उत्थान के बजाय पतन का जतन कर रहे हैं। हर कोई चाहता है कि उन्नति हो लेकिन जाने-अनजाने गिरावट की ओर जाने का ही काम कर रहे हैं। कहते हैं, हम आधुनिक बन गये हैं लेकिन सुसंस्कारिता से पिछड़ रहे हैं। मनुष्य ने प्रथम अणु बम्ब जो बनाया था, वो द्वितीय विश्व-युद्ध के समय जापान के हिरोशिमा-नागासाकी शहरों पर फेंका गया था और उससे जो तबाही हुई थी वो देखी भी थी। उसकी भयानकता का अंदाजा व अनुभव राजनेताओं और वैज्ञानिकों को उस समय हो गया था परन्तु इन सबके बावजूद भी विनाशकाले विपरीत बुद्धि मानव, अधिक शक्तिशाली तथा रिफाइन क्वालिटी के विनाशक शस्त्रों का निर्माण करते ही जा रहे हैं। चीजें, मकान सलामत रहें और इंसान खत्म हो जायें, ऐसे केमिकल्स बम्ब भी बनाये गये हैं, तो ये क्या है? ये पतन का ही जतन है। हम ही महाविनाश के मुख में जाने की तैयारियाँ तीव्र गति से कर रहे हैं।

हम पर सवार है भौतिकता का भूत

संसार का खेल आत्मा रूपी पुरुष और प्रकृति के पंच महाभूतों का बना हुआ है। प्रकृति हमें अपने भौतिक अस्तित्व को बनाये रखने के लिए हवा, पानी, रोटी, कपड़ा, मकान देती है। संसार में जितनी भी चीजें, साधन, वैभव, पदार्थ हम देखते हैं वे भी प्रकृति के पाँच तत्वों से ही बनते हैं। कहने का मतलब यह है कि विश्व-नाटक में प्रकृति हम आत्माओं की पूरी सहयोगी है। दूसरे शब्दों में, हम चैतन्य शक्ति आत्माओं की अभिव्यक्ति ही प्रकृति में शरीर के माध्यम से होती है। हम इस सृष्टि खेल के एक्टर बन ही तब पाते हैं जब प्रकृति का साथ-सहयोग लेते हैं। लेकिन-लेकिन आज कहना पड़ेगा कि मानव जीवन की हर क्षण की साथी-सहयोगी ऐसी प्रकृति के साथ हम क्या खिलवाड़ कर रहे हैं? हम अपने लोभ-लालच, स्वार्थ, धनलोलुपता, लापरवाही के कारण प्रकृति को प्रदूषित करते हैं। प्रकृति का इतना दोहन किया गया है जो आज पर्यावरणीय असन्तुलन उत्पन्न हो गया है। उसके परिणामस्वरूप प्राकृतिक आपदाओं का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा है, जो मानवीय त्रासदी और संहार-लीला का ताण्डव रचती है। फिर भी मनुष्य कितना विवेकशून्य बनता जा रहा है जो प्रदूषण के केन्द्रबिन्दु, उद्गम-बिन्दु अपने मन को शुद्ध, श्रेष्ठ और शुभ बनाने को तैयार नहीं है। हम तो अपना मन साधन और समृद्धि पाने की साधना में लगा बैठे हैं। गलत साधनों और गलत तरीकों से हम अपनी कमाई बढ़ाना चाहते हैं लेकिन अपनी दैहिक, भौतिक, इहलौकिक कामनाओं को संयमित कर सादा, सरल, सात्विक जीवन जीना नहीं चाहते। लगता है, भौतिकता का भयानक भूत, वासना का विकराल बेताल और अश्लीलता का असुर हम पर सवार हो गया है और हम बहुत तेजी से पतन के गर्त में जा रहे हैं।

जहरीला चक्रव्यूह

वैभव का विकास होने से मनुष्य गंदी आदतों का भी शिकार होता जा रहा है। फिजूलखर्ची बढ़ रही है। सचमुच एक ऐसे जहरीले चक्रव्यूह में इंसान फंसता जा रहा है जो वो अभक्ष्य का भक्षण करने लगा है। जिन पत्तों को जानवर सूंघते भी नहीं, सर्वश्रेष्ठ बुद्धिशाली मानव इन्हें खाता है, सूंघता है, फूंकता है और अपने दिल-दिमाग को असंतुलित, अविवेकी बनाता है। आश्चर्य की बात तो ये है कि इन चीजों पर लिखा भी होता है कि ''स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है'' फिर भी पढ़ा-लिखा इन्सान इनके

चंगुल में फंसता जाता है। और तो और, देश व नागरिकों की जिम्मेवार सरकार भी इन नुकसानदेह चीजों का उत्पादन, आयात-निर्यात करती रहती है। व्यापार और उद्योग करने वाले लोग भी अपनी नैतिक और सामाजिक जिम्मेवारियों को नज़रअंदाज कर मानव जाति की मौत का ऐसा सामान तैयार करते जा रहे हैं।

मूर्खता की पराकाष्ठा

गीत-संगीत, नृत्य-कला, साज-श्रृंगार, सौंदर्य-यौवन आदि का सर्जन मानव जीवन को सरस और सुंदर बनाने के लिए ही किया गया लेकिन देह-अभिमानी मनुष्य ने दैहिक आकर्षण, कामवासना युक्त मानसिकता के वश उसका अश्लील प्रदर्शन किया। फलस्वरूप वृत्तियों का बहकना, चरित्रहीनता, असंयमित कर्म और व्यवहार आदि का परिणाम सामने आया है। चित्रों-चलचित्रों, अखबारों, मासिक पत्रिकाओं, सोशल मीडिया के माध्यम से प्रस्तुत हो रहे देह-प्रदर्शनों, अश्लील हरकतों के दृश्य देख-देखकर मानव स्वयं पर नियंत्रण गंवाता जा रहा है जिस कारण यौन शोषण, बलात्कार, अपहरण की विकृत घटनाएं होने लगी हैं। सोचिये, हम ही सर्जक, हम ही निर्देशक, हम ही कलाकार और हमारी बनाई हुई कृति हमारे ही चरित्र और संस्कारों को बिगाड़ने वाली हो तो इसे मूर्खता की पराकाष्ठा ही तो कहेंगे।

सम्बन्ध बने बन्धन

कुल मिलाकर लगता है कि हम स्वयं ही स्वयं को जंगली बनाने पर तुले हुए हैं। इन्द्रियों के रस-स्वाद की, हिंसा-छल-कपट की वृत्तियों को उकसाने वाले चित्रों, किताबों के द्वारा मानवीय मन में विषयाग्नि जगाकर, हम मानव समाज को जिंदा ही बदहाल बना देना चाहते हैं। यह तो पतन का आह्वान है, पतन की ही आराधना है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, उसमें भाव है, भावनायें हैं, संवेदनाएँ हैं। वो अकेला जी नहीं सकता है, यह ही कारण है कि हम अनेकानेक संबधों में बंधते जाते हैं। हम परिवार रचते हैं, हम मित्र-मण्डल बनाते हैं, समाज का निर्माण करते हैं। जीवन के समस्त कार्यों में जैसे सफाई, भोजन, वस्त्र, शिक्षा, स्वास्थ्य, कारोबार, यातायात, धनोपार्जन, स्वउन्नति आदि में हमें व्यक्तियों, संस्थाओं, व्यवस्थाओं के सहयोग की आवश्यकता रहती है। लेकिन आज हमने अपने ही अहम और वहम के कारण, व्यग्रता और उग्रता के कारण, जोश और आवेश के कारण, लगाव और टकराव के कारण इन सम्बन्धों को दु:ख, कलह-क्लेश, मनमुटाव और अनबन के बन्धनों में बदल दिया है। वाणी की मधुरता, व्यक्तित्व की संवादिता, सम्बन्धों की वफादारी जैसे सद्गुणों की कमी होने के कारण परिवार टूट रहे हैं, दिलों की दूरियाँ बढ़ रही हैं, सामाजिक ढाँचा ढह रहा है, वरिष्ठों, बुजुर्गों, अनुभवियों की छत्रछाया उठ रही है। हम स्वतंत्रता के नाम पर स्वछंदता के शिकार होते जा रहे हैं। नई पीढ़ी के बच्चे, स्नेह और सुसंस्कारों की पालना से वंचित हो रहे हैं। अपरिपक्व मनोदशा के चलते अनेक प्रकार के अनैतिक कर्मों के शिकार हो रहे हैं। परिणाम आता है कि व्यक्ति न घर का, न घाट का रह जाता है और आखिर जीवन समाप्त करने के प्रयास करने लगता है।

सुख के फल पाने के लिए कर्म और धर्म का समन्वय जरूरी

शुभ-भावना, सद्-विचार, सद्गुण, सद्व्यवहार की धारणाओं पर ध्यान न देकर हम स्वयं ही स्वनाश और सर्वनाश करने पर उतारू हो गये हैं। हम अपनी ही जीवन बगिया और संसार उपवन को उजाड़ने में लग गये हैं। परिवार संस्था को मिटाकर समाज को जमघट बनाने लग गये हैं। इससे अंतत: हम तमाशे ही खड़े करेंगे, कोई सुकून पा सकेंगे नहीं। जीवन में कर्म के साथ धर्म का भी अति महत्व है। हम जो कुछ पाते हैं, कर्म बल से पाते हैं लेकिन हमारे कर्म भी सुख के फल तब देंगे जब हम धर्म की धारणाओं का कर्मों में समन्वय करेंगे।

मूल उद्देश्य से भटक गया धर्म

आध्यात्मिक ज्ञान और योग हमें अंतर्मुखी, परमोन्मुखी बनाता है लेकिन धर्म आज अपने मूल उद्देश्यों से भटक गया है। बाह्य क्रियाकाण्ड, साधन-सामग्री, विविध विधियाँ, विद्वता-पांडित्य में धर्म खो गया है। फिर भी सत्य को स्वीकार करने के लिए हम तैयार नहीं हैं। लोगों की श्रद्धा का गलत लाभ उठाने वाले, धर्म को

जीवन-निर्वाह का साधन बनाने वाले, भय से भक्त बनाये रखने वाले लोग भी हैं। धर्माधिकारियों का तो कर्त्तव्य है, धर्मभीरुओं को माया की मदहोशी से जगाना और सतपथगामी बनाना लेकिन खेद की बात है कि कोई जगह वे ही मायावी बन जाते हैं और पापलीला करते रहते हैं। इससे भी बड़ी खेद की बात है कि उनके पाप फूटने के बाद भी हम सत्य समझने और स्वयं को सीधा परमात्मा से जोड़ने को तैयार नहीं हैं। इसे क्या कहेंगे?

फिर भी हम जाग कर झूठ का बहिष्कार करने की हिम्मत नहीं करते हैं बल्कि झूठों के पूजारी बने रहते हैं। यह कैसी विडम्बना है कि धर्म रूपी साधन के द्वारा आत्म-जागृति पाने के बजाय, उर्ध्वगामी बनने के बजाय हम अवनति को ही निमन्त्रण दे रहे हैं और अधमगति को ही पाते जा रहे हैं।

पाठक मित्रो, सुज्ञ आत्मीय जनो, विभिन्न क्षेत्रों का ये दशा-दर्शन करा कर मैं ये ही अहसास कराना चाहती हूँ कि हम जाने-अनजाने पतन का ही जतन कर रहे हैं। संसार चक्र के अंतिम चरण पर हम पहुँच गये हैं जहाँ से सर्वनाश ही नजर आ रहा है।

अभी भी समय है, अभी भी हम संभल सकते हैं, अभी भी हम जाग जाएं, सत्य-ज्ञान का प्रकाश पा लें, कल्याणकारी परमपिता हमें अभी भी तारने और पार उतारने को तैयार हैं। हम उनका हाथ थाम लें, चलें, कलियुग से मुँह मोड़ लें, सतयुग से नाता जोड़ लें। ■■■

धरा की पुकार

■■■ **ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क (दिल्ली)**

कृषिराज! धराराज! सुन! पुकारती है दुखी धरा ।
बोझ इतना मुझ पे धरा, करो इसे हल्का जरा।।

डालो शुद्ध खाद, हो जाए पुलकित मेरा जर्रा-जर्रा ।
बहुत चले हल मेरे सीने पे, रसायनों से मेरा साँस घुटा ।।

फल बड़े-बड़े, भीतर पोलम पोल, ऐसा पैदावार बढ़ा ।
चली गयी उर्वरा शक्ति मेरी, इंजेक्शनों का बोझ पड़ा।।

शान्ति की शक्ति को जी चाहता है अब।
अमृत कण धारने को जी चाहता है अब।।

चेत! चेत!! जाग! जाग!! सुन क्या कहे आकाश?
रूहानी स्नेह भरा ऊपर से आध्यात्मिक सकाश।।

थोड़ा-सा दृढ़ संकल्प रख ले, है तेरे अन्तर्मन के पास।
शिव-ज्योति स्मरण से कर ले अलौकिक अहसास।।

ईश्वरीय अनुभूति संग, कर तू बीजारोपण।
परमात्म नयन विश्वास का सशक्तिकरण।।

इस यौगिक खेती की अब मुझे जरूरत बहुत।
पंचामृत खाद पर मेरी टिकी आस बहुत।।

कृषिदाता! अन्नदाता!! तू ही स्वास्थ्य दाता।
बदल दे कृषि नीति! तू ही कर सकता पूर्ण यौगिक पिपासा।।

हुए खुशहाल, जिसने भी इस पर ध्यान धरा ।
हुए भरपूर, सम्पन्न, इससे महक उठी धरा।।

सफलता का रहस्य

ब्रह्माकुमार विनायक, सोलार प्लान्ट, शान्तिवन (आबू रोड)

प्रसिद्ध महात्मा नित्यानंद जी ने एक बार अपने शिष्यों को बांस से बनी बाल्टियाँ पकड़ाकर कहा, ''जाओ, इन बाल्टियों में नदी से जल भर लाओ, आश्रम में सफाई करनी है।"

गुरु की इस विचित्र आज्ञा को सुनकर सभी शिष्य आश्चर्यचकित रह गए कि भला बांस से बनी बाल्टियों में जल कैसे लाया जा सकता है। फिर भी सभी शिष्यों ने बाल्टियाँ उठाई और जल लेने नदी की ओर चल दिए। वे जब बाल्टियाँ जल में डालते तो बाहर निकलते ही सारा जल निकल जाता था।

अंततः निराश होकर, एक देवव्रत नाम के शिष्य को छोड़कर, सभी शिष्य लौट आए और गुरु जी से अपनी दुविधा बता दी। लेकिन, देवव्रत बराबर जल भरता रहा। जल रिस जाता तो पुनः भरने लगता। शाम होने तक वह इसी प्रकार श्रम करता रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि बांस की शलाकाएं फूल गई और छिद्र बंद हो गए। तब वह बड़ा प्रसन्न हुआ और उस बाल्टी में जल भरकर गुरुजी के पास पहुंचा।

जल से भरी बाल्टी देख गुरु नित्यानंद जी ने उसे शाबाशी दी और अन्य शिष्यों को संबोधित करते हुए कहा, ''विवेक, धैर्य, निष्ठा व निरंतर परिश्रम करने से दुर्गम कार्य को भी सुगम बनाया जा सकता है।"

मनुष्य से देवता बनने के पुरुषार्थियों के सामने यह प्रसंग एक मार्गदर्शक उदाहरण है।

परम सद्‌गुरु शिव परमात्मा कहते हैं, ''मीठे बच्चे, अपने को आत्मा समझ मुझ परमात्मा को निरंतर याद करो तो आसुरी संस्कार भस्म हो कर दैवी संस्कार धारण हो जाएँगे'' लेकिन, हम बच्चे सोचते हैं, यह कैसे होगा? कितनी भी कोशिश करो, याद तो ठहरती ही नहीं। हमें दिनभर सैकड़ों देहधारियों के संबंध-संपर्क में आना पड़ता है, सवेरे से रात तक कर्मक्षेत्र में रहना पड़ता है, कर्मेंद्रियाँ भी अपनी चंचलता दिखाती रहती हैं, परिस्थितियाँ हलचल मचाती हैं, माया का तूफान भी लगता है, तो याद कहाँ से ठहरेगी? हम जंगल में थोड़े ही हैं, परिवार के साथ रहना है तो यह कैसे संभव है? कई पुरुषार्थी प्रयत्न करते भी हैं लेकिन जब एकाग्रता टूटने लगती है तो हताश होकर छोड़ देते हैं।

परन्तु.......नहीं। देवव्रत के मुआफिक हमें चार बातों को धारण करना है।

विवेक कहता है, हमें आज्ञा देने वाला कोई साधारण नहीं बल्कि स्वयं भगवान शिव है जो परम शिक्षक और परम सद्‌गुरु है। धैर्य, स्वयं सर्वशक्तिवान हमारा साथी है, इस स्मृति को जाग्रत रखता है। पुरुषार्थ में निष्ठा, अल्पकाल के आकर्षणों से अनासक्त बनाती है और निरंतर परिश्रम, मंजिल तक ले जाने वाला एकमात्र साधन है।

हम भी स्वयं को देवव्रत बनाएँ। मनमनाभव हो कर बुद्धि को शिव परमात्मा से जोड़ने का सतत परिश्रम करें। भले अनगिनत बार योग खंडित हो, फिर भी अथक हो कर बार-बार योग लगाने की दृढ़ मेहनत करते रहें। जैसे बांस की बाल्टी में जल भर गया, वैसे ही धीरे-धीरे एकाग्रता रूपी बाल्टी के छिद्र भरते जाएँगे और असम्भव भी सम्भव अर्थात् अस्थिर याद की यात्रा भी स्थिर और अविनाशी बन जाएगी, जो हमारे सद्‌गुरु की हमारे प्रति आश है। ■■■

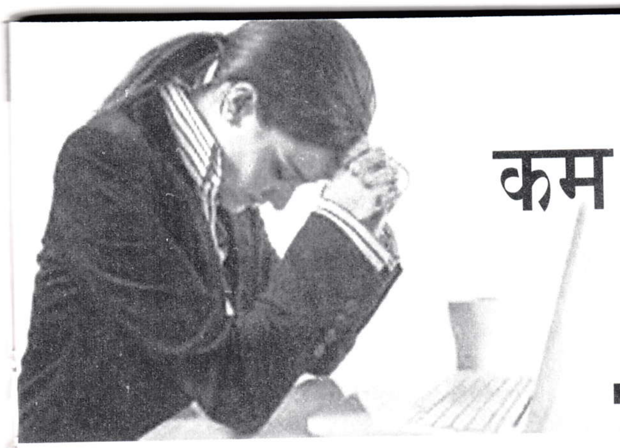

कम करो व्यर्थ का वजन

■■■ ब्र.कु. दीपा बहन, नशीराबाद (महाराष्ट्र)

आज के इस फैशन के युग में हरेक मनुष्य का ध्यान अपने शारीरिक सौन्दर्य पर अधिक है। चाहे नर हो या नारी, सभी चाहते हैं कि हम सबसे अधिक सुन्दर दिखें। सौन्दर्य में बाधक मोटापे को दूर करने के लिए वे अनेकानेक दवाइयाँ खाते रहते हैं, व्यायाम भी करते हैं, प्राणायाम सीखते हैं, कम भोजन खाते हैं और बहुत धन भी खर्च करते हैं। लेकिन इतना सबकुछ करने के बावजूद भी मनुष्य पूर्ण रूप से कहाँ सुन्दर हो पा रहा है? कहाँ उसकी बीमारियाँ दूर हो पा रही हैं? और ही दिन-प्रतिदिन नई-नई व्याधियाँ प्रकट होती जा रही हैं।

मन को गुणों से सजाना ही सच्चा सौन्दर्य

समय की माँग है, तन से भी पहले मन को सुन्दर और स्वस्थ बनाने की। बीमारियों का एक कारण यह भी है कि मन के विचारों का असर शरीर पर हो रहा है। हमारा मन व्यर्थ के वजन से कितना भारी है, क्या इसके ऊपर कभी हमारा ध्यान जाता है? मन दुर्गुणों से कितना कुरूप हो रहा है, क्या इसका ध्यान है हमें? जितना ध्यान हम शरीर को सुन्दर बनाने में देते हैं, क्या उतना ही समय मन को दिव्य गुणों से सजाने में भी दे रहे हैं? जिसका मन गुणों से सजा हुआ हो वो स्वत: ही सबको आकर्षित करता है और वो ही सच्चा सौन्दर्य है। हम शरीर से भले ही कितने भी सुन्दर हों लेकिन जब हम कर्म में आते हैं तब ही हमारी सुन्दरता पहचानी जाती है।

मन के बोझ

क्या हमने कभी चेक किया है कि हमारे मन पर कितने प्रकार के बोझ हैं? सम्बन्ध-सम्पर्क में आने वाले लोगों के व्यर्थ विचारों का बोझ, अपने अनेक जन्मों के पुराने हिसाब-किताब का बोझ, संसार की ज़िम्मेवारियों का बोझ, किये हुए पाप कर्मों का बोझ, अपने स्वभाव-संस्कारों का बोझ, परचिंतन-परदर्शन करने का बोझ – ऐसे कितने ही प्रकार के बोझ पड़ते-पड़ते आत्मा कितनी बोझ वाली हो गई है, क्या इस पर हमारा ध्यान है? अगर शरीर ज़्यादा वजन सहन नहीं कर सकता तो क्या आत्मा ये सारे व्यर्थ के वजन सहन कर सकती होगी? इसी के कारण आज मनुष्य चिड़चिड़े स्वभाव का हो गया है। सदा ही बेचैन, उदास, मायूस और अस्वस्थ रहने लगा है। इसके कारण ही टेंशन, डिप्रेशन और हार्ट अटैक की बीमारियाँ समाज में बढ़ रही हैं। हम जीवन में आनन्द का अनुभव नहीं कर पा रहे हैं।

ऊपर से भरपूर, अन्दर से खोखला

आज कोई भी एक ही घर में, एक ही छत के नीचे, एक-दूसरे के साथ मिलकर नहीं रहना चाहते। कोई किसी से दिल खोल कर बात नहीं कर पाते क्योंकि हरेक का मन एक-दूसरे के लिये भारी हो गया है। कोई किसी के संस्कारों से संस्कार मिलाना नहीं चाहता। घर-घर में लड़ाई-झगड़े चलते रहते हैं। किसी का किसी से सच्चा नि:स्वार्थ प्यार नहीं रहा है। शुभभावना, शुभकामना नहीं रही, कोई किसी को आगे बढ़ाता नहीं, बढ़ते हुए देख पाता नहीं। आज का मनुष्य ऊपर से तो सभी आधुनिक चीज़ों से भरपूर हो रहा है लेकिन उतना ही अन्दर से खोखला होता जा रहा है।

राजयोग ही सही दवाई

ईर्ष्या, नफरत, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार से बोझिल और मलिन मन हम कैसे ईश्वर में लगा सकेंगे?

जैसेकि एक सर्प अपने अन्दर के विष को त्यागे बिना ही शीतलता पाने के लिए किसी चंदन के वृक्ष से लिपट जाता है वैसे ही हम भी अपने अन्दर के काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी विष को त्यागे बिना ही ईश्वर प्राप्ति करना चाहते हैं परन्तु क्या यह सम्भव है? शरीर पर बढ़ते बोझ का इलाज तो भौतिक जगत में हो भी सकता है लेकिन मन पर बढ़े बोझ की दवाई सिर्फ राजयोग ही है।

राजयोग हमें सिखाता है कि कैसे हम अपने मन को हल्का रखें जिससे कि यह मन दुरुस्त रहे, शक्तिशाली बने और श्रेष्ठ विचारों में रमण करे। इससे शरीर भी स्वस्थ हो जायेगा। राजयोग का अर्थ ही है मन-बुद्धि की तार परमात्मा से जोड़ना। स्वयं को आत्मा निश्चय कर परमात्मा पिता के साथ मन को एकाग्र करने से तन-मन एकदम स्वस्थ हो जाते हैं।

राजयोग हमें सिखाता है कि हरेक आत्मा का पार्ट अपना-अपना है। इसमें किसी का कोई दोष नहीं है। इसलिए जो हो रहा है, अच्छा हो रहा है, जो होने वाला है, वो और भी अच्छा ही होगा। ऐसी सोच हो जाने से चाहे हमारे साथ अच्छा हो या बुरा, नुकसान हो या फायदा, हर बात को हम साक्षी हो देखने लगते हैं। हरेक के कर्म का खाता देखने वाला भगवान है। वो सुप्रीम जज है। उसने हमें ये अधिकार नहीं दिया है कि हम किसी को बदल दें या सजा दें। अत: हम निश्चिन्त रहें और जीवन का आनन्द लें।

सुप्रीम सर्जन हैं परमात्मा

परमात्मा पिता ही सभी डॉक्टरों के डॉक्टर हैं, जो मन को दवाई दे सकते हैं। परमात्मा पिता की याद से ही हम मन में लगी हुई पाँच विकारों की बीमारियों से निजात पा सकते हैं। इससे ही मनमुटाव, आपसी भेदभाव, नफरत, ईर्ष्या आदि भुलाकर हम आपसी नि:स्वार्थ स्नेह की भावना जागृत कर सकते हैं। जिसका मन ही सुन्दर हो गया, उसको सारी दुनिया भी सुन्दर लगने लगती है। यही जीवन की सच्ची सुन्दरता है। ■■■

थामा है दामन तुम्हारा

ओमप्रकाश आदर्श, अम्बाला सिटी (हरियाणा)

मीठे बाबा, हो आप मेरा सहारा।
मैंने थामा है दामन तुम्हारा।।

तेरी मुरली को ही सुनता मैं डेली।
हल हुई है मेरी जीवन-पहेली।।
जिन्दगी ही मिल रही है दोबारा।
मैंने थामा है दामन तुम्हारा।।

देख अपने गुनाहों को ही मैं अटकूँ।
रुल चुका हूँ, अब और न भटकूँ।।
अपनी मुरली ही में देना इशारा।
मैंने थामा है दामन तुम्हारा।।

दिल जिन्हों का है मैंने दुखाया।
खुद हँसा मैं रावण, किसी को रुलाया।।
कर सकूँ मैं उसी का कफ़ारा।
मैंने थामा है दामन तुम्हारा।।

तेरे ही सम्बन्ध से मिली जिन्दगी है।
तेरी ही मुरली अद्वितीय लगी है।।
कर सकूँ न मैं तुझ से किनारा।
मैंने थामा है दामन तुम्हारा।।

तेरी मीठी मुरली का आदर्श सुनकर।
अपने साधन का ही पुरुषार्थ चुनकर।।
स्वयं आत्मा को मैंने निखारा।
मैंने थामा है दामन तुम्हारा।।

ब्रह्माकुमारी संस्थान से जुड़कर निष्काम सेवा भाव और समर्पण भाव सीखें

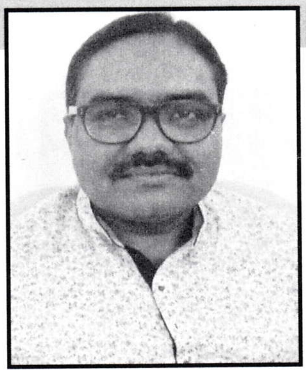

■■■ देवकीनन्दन मिश्रा, दैनिक राष्ट्रीय सहारा,
सम्पादक एवं यूनिट हेड, कानपुर (उ.प्र.)

मैं शान्तिवन में पहली बार आया हूँ। पेशे से मैं जर्नलिस्ट हूँ। आप सभी का किसी न किसी रूप में पत्रकारों से परिचय भी होगा और उनसे मुलाकात भी हुई होगी। उनके कार्य-व्यवहार के बारे में भी आप लोगों ने सुना होगा। मैंने ब्रह्माकुमारीज शान्तिवन एवं माउण्ट आबू में आकर तीन दिनों में जो देखा और महसूस किया है, मुझे लगा है कि भारत देश में ब्रह्माकुमारीज संस्थान एक अलग ही दुनिया है। मैं विदेशों में भी कई बार कई प्रोग्रामों में गया हूँ लेकिन यहाँ आ करके मैंने जो देखा और समझा वह कहीं नहीं देखा।

देशहित में समर्पण भाव से सेवा

यहाँ की सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हजारों लोग निस्वार्थ सेवा में जुटे हैं। जिस निस्वार्थ सेवा के बारे में गीता में कहा गया है, कर्म करो लेकिन फल की इच्छा मत करो। मुझे ब्रह्माकुमारीज संस्थान के अलावा ऐसा अन्य किसी जगह पर देखने को नहीं मिला। मैंने ग्लोबल हॉस्पिटल एवं शांतिवन के जिस भी विभाग का चक्कर लगाया, जिससे भी बात की, उसने यही कहा कि मैं समर्पण भाव से कार्य करता हूँ अथवा समर्पित हूँ। मैंने डिवोटी (Devotee) शब्द तो बहुत पहले सुना था लेकिन संसार में आज तक कहीं भी डिवोटी (समर्पण भाव वाले) मिले नहीं। लेकिन ब्रह्माकुमारीज संस्थान में सिर्फ एक नहीं, हजारों डिवोटी मिले हैं, जो देश और समाज हित के लिए सर्मपण भाव से सेवा कर रहे हैं। मैं इससे आल्हादित हूँ, बहुत प्रभावित हुआ हूँ। मैं इतना प्रसन्न हूँ कि मेरे पास प्रशंसा के लिए शब्द नहीं हैं, जो मैं आपके लिए कुछ कह सकूँ लेकिन आप ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों की जितनी भी तारीफ की जाये, उतनी कम ही है।

जितनी प्रशंसा की जाए, कम है

आप लोगों में जरूर ऐसी कोई अद्‌भुत शक्ति है वरना किसी को अच्छे कार्यों की तरफ आकर्षित करना इतना आसान काम नहीं होता है। आप लोगों में जरूर कुछ कैलीबर है। मैं आदरणीया दादी रतनमोहिनी जी के पास बैठा हूँ। दादीजी, आपमें ऐसे अद्‌भुत गुण हैं जो इतने हजारों लोगों को आपने डिवोटी बना दिया है। कई लोगों से मुझे पता चला कि कोई दिल्ली, कोई आगरा, कोई अन्य स्थानों से अपने प्रोफेशनल कार्यों से एक सप्ताह या उससे अधिक दिन की छुट्टी लेकर यहाँ निस्वार्थ सेवा करने अपने-अपने खर्चे से आये हैं, जो काबिले तारीफ है। अपने प्रोफेशन में रहते हुए, ईश्वरीय सेवा के लिए समय निकालना, यह बहुत बड़ी बात है। ऐसे लोगों की जितनी भी प्रशंसा की जाये, वह कम ही होगी। मुझे बताया गया कि इस संस्था में करीब 12 लाख सदस्य हैं। मैं तो यह चाहूंगा कि सिर्फ 12 लाख ही न रहें लेकिन देश की 130 करोड़ की पूरी आबादी इस संस्था की सदस्य बने, यही मेरी शुभकामना है। इस ब्रह्माकुमारी संस्था से जितनी ज्यादा संख्या में लोग जुड़ेंगे, उन्हें आत्मा और परमात्मा के मिलन का लाभ होगा। आत्मा और परमात्मा के बारे में जो भ्रमित हैं, उनका भ्रम दूर होगा। उन्हें इस संस्था से आत्मा और परमात्मा की सही जानकारी मिलेगी। इस संस्था के ज्ञान से सबका जीवन अच्छा होगा। जीवन अच्छा होगा तो श्रेष्ठ समाज से बेहतर राष्ट्र का निर्माण होगा। ■■■

दिल सच्चा तो सब कुछ अच्छा

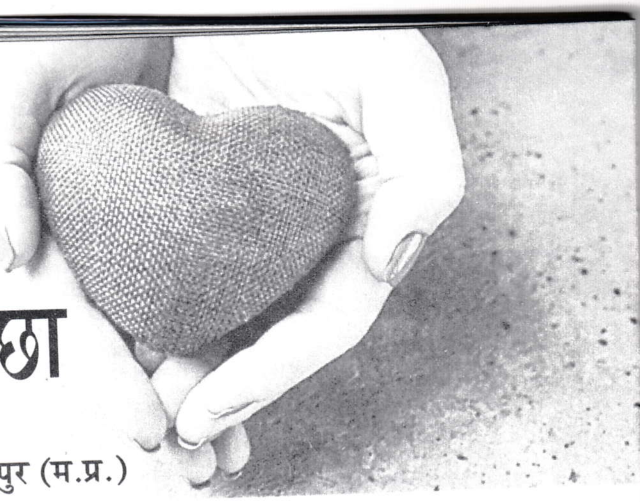

■■■ ब्रह्माकुमारी रुखमा, दापोरा, बुरहानपुर (म.प्र.)

दिल की सच्चाई और सफाई, मन की शुद्धता और पवित्रता हर कार्य में सिद्धि का आधार हैं। कहा भी गया है, 'साफ दिल तो मुराद हासिल'। हम यदि अपने मनोरथ को सिद्ध करना चाहते हैं तो दिल से सच्चे और साफ बनें। हमारे मन में कोई छल-कपट, राग-द्वेष, अशुभ या नकारात्मक विचार नहीं होने चाहिएँ। जो सदा शुभ सोचते हैं, सबके प्रति शुभभावना और शुभकामना रखते हैं उनके साथ कभी अशुभ हो ही नहीं सकता।

संत प्रभुदास के बाल्यकाल की बात है कि उन्होंने तीर्थयात्रा पर जाने के लिए अपनी माता से आज्ञा ली। माता के नेत्र भर आये। अत्यंत स्नेह से उन्होंने कहा, बेटा, मेरे पास कुल सौ रुपये हैं। तुम्हारा एक भाई और है इसलिए पचास रुपये तुम लेकर जाओ परन्तु स्मरण रहे, कभी झूठ नहीं बोलना। बालक प्रभु ने सिर झुकाया और बोले, भगवान की दया से पुनः दर्शन होंगे और यात्रा के लिए चल पड़े।

यात्रा के सात दिन भी नहीं बीते थे कि डाकुओं ने उनके दल को घेर लिया और लूट लिया। एक डाकू ने प्रभु से पूछा, तुम्हारे पास क्या है? प्रभु ने उत्तर दिया, मेरे पास पचास रुपये हैं। डाकू ने सोचा, यह लड़का हँसी कर रहा है। प्रभु को उसने पुनः पूछा, सच बता दे तेरे पास क्या है? प्रभु ने अत्यन्त शांत भाव एवं निर्भीकता से पुनः उत्तर दिया, एक बार कह तो दिया, मेरे पास पचास रुपये हैं, आप लोग एक ही बात को बार-बार क्यों पूछ रहे हो? डाकुओं के सरदार ने पूछा, रुपये कहाँ हैं? बाल प्रभु ने अपने कपड़ों के नीचे से एक सिला हुआ पॉकेट उधेड़ कर, पचास रुपये निकाल कर रख दिये। सरदार चकित हो गया। उसने कहा, जिस वस्तु को तुमने इतना सुरक्षित रखा था, उसे क्यों बता दिया? बालक प्रभु ने कहा, मैंने अपनी माँ से सत्य बोलने की प्रतिज्ञा की थी, फिर झूठ कैसे बोलता!

बालक का निश्छल जवाब सुनकर सरदार के नेत्र भर आये। उसने कहा, प्यारे बच्चे, इस अल्पायु में तुम माँ को दिये वचन का आदरपूर्वक पालन कर रहे हो किंतु मैं अपनी दाढ़ी उज्ज्वल होने के बाद भी, परमेश्वर, जो मेरा असली पिता है, मेरा जन्मदाता है उसकी आज्ञा का पालन नहीं कर पाया। किस मुँह से उसके पास जाऊँगा! आँसू पोंछते हुए सरदार ने पुनः कहा, बच्चे, आज से मैं अपने इस कुकृत्य को सदा के लिए छोड़ता हूँ। सरदार को पश्चाताप करते देख सभी ने अपने कुकर्म का त्याग कर लूट का सारा माल वापस करके, धर्ममय जीवन व्यतीत करने और लोक कल्याणकारी कार्य करने की प्रतिज्ञा ली।

उपरोक्त कहानी हमें सिखा रही है कि सत्य पर चलने वालों की हमेशा जीत होती है। सत्य के सूर्य को असत्य के काले बादल ज्यादा देर तक नहीं ढक सकते। सत्य को स्वतः ही सिद्ध होने का वरदान प्राप्त है। भगवान का आशीर्वाद सदा उनके साथ है, जो सत्य की नाव में सवार हैं।

सच्चाई बनाती है निर्भय और निश्चिंत

आज कलियुग में बहुत-से लोग झूठ और फरेब से धन-दौलत और मान-मर्तबा पा लेते हैं परन्तु कहा जाता है कि सच के गले में माला पड़ती है और झूठ का मुँह काला होता है। यह बात हर रोज देखने को मिल रही है कि बड़े-बड़े सेठ, साहूकार, नेता और प्रशासक झूठ और फरेब से काली कमाई तो जोड़ लेते हैं परन्तु वे कभी सुकून से रह

नहीं पाते हैं। वे हमेशा चिंता और तनाव से ग्रस्त रहते हैं, भयभीत रहते हैं कि कहीं उनका झूठ पकड़ा न जाये, उनकी पोल खुल ना जाये और जब सच सामने आता है तो माल-मिलकियत से ओढ़ी गई झूठी इज्जत वाले भी शर्मसार हो जाते हैं। उनकी काली कमाई, उनका ही मुँह काला कर देती है। परन्तु जो दिल से सच्चे-साफ हैं, ईमानदारी से रहने वाले हैं, वे सदा निर्भय और निश्चिंत रहते हैं और थोड़े में सन्तुष्ट रहते हैं।

अच्छा करो तो अच्छा मिलेगा

कहा गया है, 'कर भला तो हो भला'। जो लोग दूसरों के साथ भलाई का कार्य करते हैं, उन्हें भी आज नहीं तो कल अच्छे कर्मों का फल किसी न किसी रूप में प्राप्त होता ही है। इसके विपरीत, बुरा करने वाले को भी बुराई का परिणाम किसी ना किसी रूप में भोगना पड़ता है। इसलिए भलाई करते हुए हम कभी यह नहीं सोचें कि इसके बदले में क्या मिलेगा और यह भी न सोचें कि दूसरों ने हमारे साथ बुरा किया तो हम अच्छा क्यों करें। हर व्यक्ति की करनी और भरनी उसके साथ रहती है। किसी अन्य को न देख, हम सदा नेकी के रास्ते पर चलते रहें। यदि हमारे मन में सच्चाई-सफाई है तो ईर्ष्या, नफरत और बदले की भावना से हम दूर हैं। जो दिल के सच्चे हैं, उनका कोई बाल भी बाँका नहीं कर सकता।

सच्चाई की ही जीत होती है। कहा जाता है, 'सत्यमेव जयते', 'सच्चे दिल पर साहेब राजी'। साहेब को राजी करने के लिए हर कर्म में सत्यवादी बनो। व्यक्ति सच्चा है तो उसके लिए जीवन में सब कुछ अच्छा है। ■■■

खुशखबरी

प्रभु प्रिय नूरे रत्न दैवी बहन एवं भाईजी, शान्तिवन से ब्र.कु. आत्म प्रकाश भाई की स्नेह सम्पन्न याद स्वीकार हो।

* आपको यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि रूहानी सेवा के लिए पत्रिका ''राजी खुशी''भी ओम शान्ति प्रिन्टिंग प्रैस से प्रकाशित हो रही है।
* पत्रिका ''राजी खुशी'' विशेष लेख सामग्री तथा अच्छी सज्जा के साथ आयेगी। ''राजी खुशी'' का कवर बहुरंगी तथा आकर्षक होगा।
* ''राजी खुशी'' का वार्षिक मूल्य घटाकर 120/ रु किया गया है। विदेश के पाठकों के लिए एक वर्ष का सदस्यता शुल्क 1200/ रु होगा।
* आप ''राजी खुशी'' पत्रिका के लिए अपने सेवा समाचार तथा फोटो भेजें तथा अध्यात्म विषय पर लिखने वाले बहन-भाईयों से भी लिखने के लिए कहें।
* लेख, सेवा समाचार, फोटो, कविता, बोधकथा आदि rajikhushi9@gmail.com पर ही भेजें।
* जिस सेन्टर को जितनी-जितनी कॉपी चाहिएँ कृपया तुरन्त सूचित करें ताकि संख्या अनुसार पत्रिका को प्रिंट किया जा सके। जिस मास से आप पत्रिका लेंगे उसी मास से एक वर्ष के लिए पत्रिका चालू हो जाएगी।
* पत्रिका के संबंध में अधिक जानकारी तथा प्राप्त करने के बारे में बी.के. बख्शी भाई से bkbakshibhai@gmail.com पर तथा 9414154383 एवं 8003990013 पर सम्पर्क किया जा सकता है। इसके साथ ही 02974 228125 पर भी जानकारी ली जा सकती है।

ईश्वरीय सेवा में,

ब्र.कु. आत्म प्रकाश, प्रकाशक

ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन

ग्लोबल हॉस्पिटल स्कूल ऑफ नर्सिंग, शिवमणि होम के पास, तलहटी आबूरोड, सिरोही, राजस्थान में दो नर्सिंग ट्यूटर्स (एक पुरुष एवं एक महिला) की आवश्यकता है।
योग्यता: मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से बी.एस.सी. नर्सिंग अथवा पोस्ट बेसिक बी.एस.सी. नर्सिंग
अनुभव: मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थान अथवा अस्पताल में कम से कम दो वर्ष का अनुभव
संपर्क करें:
मोबाइल नं:9927652140
ई-मेल: ghsn.abu@gmail.com

प्यार की भाषा में है जादुई शक्ति

■■■ ब्रह्माकुमार सत्यम, रादौर

सम्पूर्ण विश्व में अनगिनत भाषाएँ बोली जाती हैं। उनमें से भारत तो ऐसा देश है जहाँ जितने प्रांत, उतनी बोलियाँ और भाषाएँ! यह सत्य है कि सभी मनुष्यों के लिए सर्व भाषाओं को जान लेना संभव नहीं परन्तु एक भाषा ऐसी है जिसे दुनिया की हर आत्मा जानती है। यह तो वह भाषा है जिसे नन्हा-सा बच्चा भी समझता है, तो बुजुर्ग भी, अमीर भी समझता है, जिसे गूँगा भी बोलता है और बहरा भी सुनता है। यह वह भाषा है जो दुश्मन को मित्र और परायों को अपना बना देती है तथा दुखियों के दुख हर लेती है। इसका नाम है प्यार की भाषा, जो परमपिता परमात्मा से हम सभी बच्चों को विरासत के रूप में मिली है। बच्चा मात-पिता की बोली को न समझे, संभव ही नहीं है। प्यार के सागर परमपिता परमात्मा की सन्तान हर आत्मा इस भाषा को जानती है, समझती है। सचमुच कितनी कीमती विरासत दी है परमपिता परमात्मा ने हमें! परन्तु, क्या हम सभी ने उस विरासत को संभाला? कैसी विडम्बना है, प्यार के सागर के हम सभी बच्चे आज प्यार की एक-एक बूंद के लिए तरस रहे हैं। आज परिवार तो है परन्तु प्यार कहीं खो गया है। अपने तो हैं लेकिन अपनेपन का अहसास गुम हो गया है। एक बार सच्चे दिल से बताइये, क्या हम नहीं चाहते कि हम सभी आपस में बेहद प्यार से रहें, टूटते हुए परिवार एक हो जाएँ, हमारे देश की एकता फिर से लौट आए? हम सभी यही चाहते हैं परन्तु हमें लगता है कि यह कैसे होगा?

हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, आपस में सब भाई-भाई।
पर न जाने क्यों बने हैं, आज एक-दूसरे के लिए कसाई।।

परमपिता परमात्मा समझाते हैं कि प्यार की भाषा में वो ताकत है जो खोई हुई एकता को भी वापिस ला देगी। प्यार ही एक मात्र रास्ता है जो हमारी खोई हुई खुशियों को वापिस ला सकता है। हम आत्मा रूपी रंग-बिरंगे बिखरे हुए फूलों को एक गुलदस्ते में डाल सकता है। हमें करना भी क्या है? जैसे शीतलता चाहिए तो समुद्र के किनारे बैठ जाइए, गर्मी चाहिए तो अग्नि के निकट चले जाइए और प्यार चाहिए तो प्यार के सागर के करीब चले जाइये। हमारे जीवन में प्यार कम ही तब हुआ जब हम भौतिकता में इतने आगे निकल गए कि आध्यात्मिकता को मानो जीवन से समाप्त ही कर बैठे। इतना व्यस्त हो गए कि परमात्मा के पास बैठने के लिए कुछ क्षण भी निकालने मुश्किल लगने लगे। जैसे-जैसे जाने-अनजाने परमपिता से दूरियाँ बढ़ती गई, प्यार भी कम होता गया। सचमुच जब हम मेडिटेशन करते हैं अर्थात् स्वयं को परमपिता परमात्मा से जोड़ते हैं तो उनका नि:स्वार्थ प्यार स्वत: ही हमारे अन्दर आने लगता है और जो हमारे अन्दर होगा वही हम निश्चित तौर पर सबको देंगे। जो देंगे वही कई गुणा लौट कर पुन: हमारे पास आएगा। इस प्रकार धीरे-धीरे प्यार बढ़ता जाएगा और हमारी जिन्दगी से नफरत, ईर्ष्या, द्वेष, वैरभाव, समाप्त होते जायेंगे।

ब्रह्माकुमारीज में यही प्यार की भाषा पढ़ाई जाती है। जब भी आप इस विश्व विद्यालय में आएँगे, तो ऐसे लगेगा कि प्यार की सरिताएँ चारों ओर बह रही हैं। इस विश्व विद्यालय में अलग-अलग प्रांतों से समर्पित हुई बहनें, जिनका रहन-सहन, पहनावा, भाषा सब कुछ भिन्न होते हुए भी एक परिवार की तरह रहती हैं। यहाँ सदा यही सिखाया जाता है ''सम्पूर्ण विश्व एक परिवार'' है। चूँकि हम सभी उसी परिवार का हिस्सा हैं तो क्या हमें इस खूबसूरत कार्य में सहयोगी नहीं बनना चाहिए? क्या अपनी, अपने परिवार की खुशियों को वापिस लाने के लिए, सम्पूर्ण विश्व को एकता के सूत्र में बांधने के लिए हम 24 घण्टों में से एक घण्टा मेडिटेशन व राजयोग के लिए नहीं निकाल सकते? कहते हैं ना, बूँद-बूँद से सागर भरता है। अगर हम सभी दृढ़ता से इस कार्य में लग जाएँ तो क्या नहीं कर सकते और जब परमात्मा पिता साथ हो तो कोई कार्य सफल न हो, यह तो हो ही नहीं सकता। क्या आप इस कार्य में सहयोगी बनेंगे? ■■■

जैसा विचार, वैसा व्यक्तित्व

मान लो अचानक कार्यालय में कुछ ऊपर-नीचे हो गया। लोग बहुत ही नकारात्मकता में जा रहे हैं, कम्प्युटर खराब हो गया है। उसमें बहुत सारे आँकड़े थे। आप तुरन्त एक मिनट रुकें और कहें कि – यह संयोगवश हो गया, मैं देखती हूँ कि इस वक्त मैं क्या कर सकती हूँ। आप उस समय संकल्प सरंचना करने के प्रति गंभीर होंगे कि आप किस प्रकार के संकल्प कर रहे हैं। हम अंदर जो पहली चीज़ उत्पन्न करते हैं, वो सोच होती है। जिस प्रकार की हम सोच उत्पन्न करेंगे, उसी प्रकार की अनुभूति भी आयेगी। इन दोनों में कभी भी अन्तर नहीं आयेगा। आप सकारात्मक संकल्प करते हो तो अच्छी महसूसता आयेगी, नकारात्मक संकल्प करेंगे तो नकारात्मक महसूसता आयेगी। यह कभी नहीं होगा कि आप सकारात्मक विचार करें और आपको नकारात्मक महसूसता आये। ये तो मैच ही नहीं करता है।

बाहर परिवर्तन लाने के बजाए हम अपने अन्दर परिवर्तन लायें। अगर मैं दर्द में हूँ, मुझे ऐसा लगेगा कि आपने ऐसा किया, इसलिए मैं दर्द में हूँ। आपने ऐसा किया, इसकी थॉट मैं क्रियेट कर रही हूँ। अगर मुझे अपने दर्द से बाहर निकलना है तो अपने साथ प्यार से बैठकर अपनी सोच की गुणवत्ता को बदलना होगा। जैसे-जैसे हम अपनी सोच की गुणवत्ता को बदलते जायेंगे, वैसे-वैसे मैं आपके प्रति सकारात्मक सोचने लगूँगी और हमारा दृष्टिकोण आपके प्रति बदलता जायेगा।

मैं कैसा अनुभव करती हूँ यह मुझ पर निर्भर है। मान लो कि हमारे आसपास के सारे लोग गंदे हैं, खराब हैं। आप सोचेंगे कि यहाँ तो सारे खराब लोग हैं तो क्या मैं उनकी वजह से जीवन-भर दर्द में रहूँ? क्या मैं सारे लोगों को बदल सकती हूँ? नहीं।

यदि मैं अच्छा महसूस करना चाहती हूँ तो मुझे बेहतर संकल्प करने होंगे कि मेरे आसपास के सारे लोग अच्छे हैं। यदि मेरी ही सोच नकारात्मक है तो मुझे अच्छे लोग भी खराब ही दिखेंगे, फिर कोई भी अच्छा लगने वाला नहीं है। लोग वही हैं लेकिन मेरा दृष्टिकोण, मेरी सोच को निर्धारित करेगा, फिर उससे अनुभूति पैदा होगी। जैसे-जैसे अनुभूति पैदा होगी, लोगों के प्रति हमारी वैसी ही वृत्ति बनती जायेगी। ये तो हैं ही ऐसे! इस तरह से यह एक पूरी-की-पूरी श्रृंखला बनती जाती है।

उसी इंसान को लेकर कोई और व्यक्ति अच्छी अनुभूति कर सकता है। व्यक्ति तो वही है, लेकिन उसके प्रति अलग-अलग लोग अलग-अलग प्रकार की अनुभूति उत्पन्न कर सकते हैं। फिर अलग-अलग लोगों का आपके प्रति अलग-अलग दृष्टिकोण होगा। आप तो वहीं हैं। आप उनके अन्दर घुसकर अनुभूति उत्पन्न नहीं कर रहे हैं, लेकिन मैं जो आपके बारे में सोच रही हूँ, उससे हमारी आपके प्रति वृत्ति बनती जा रही है। जैसी हमारी आपके प्रति वृत्ति होगी, वैसी ही मैं आपसे बात करूँगी, फिर वैसा ही आपके प्रति हमारा व्यवहार होगा, फिर स्वत:

ही वह मेरे कार्य में आ जायेगा। मुझे वह दिखाई तब देता है, जब वह व्यवहार में आ जाता है। जो लोग मुझे अच्छे लगते हैं, मैं हमेशा ही उनसे अच्छी तरह से बात करती हूँ। वो आज गुस्सा भी कर रहे होंगे ना तो फिर भी मैं उनको समझूँगी और उनसे प्यार से बात करूँगी कि कोई बात नहीं, क्यों आप इतना गुस्सा कर रहे हैं?

क्योंकि मेरी वृत्ति उनके प्रति अच्छी है। लेकिन मेरी वृत्ति आपके प्रति ये है कि ये मुझे इतने पसंद नहीं हैं, अतः मेरी वृत्ति, क्रिया का आधार है। उसे मैंने ही आपके प्रति उत्पन्न किया था। हम जब एक-दूसरे को या अपने-आपको देखते हैं तो हम व्यवहार के स्तर पर देखते हैं, शब्द या कर्म के स्तर पर नहीं। सोच, महसूसता और वृत्ति ये तीनों प्रक्रियाएँ हमारे अन्दर पहले हो गये होते हैं, जब कोई क्रिया बार-बार दुहराई जाती है, हमारी वृत्ति भी वैसी बन जाती है। मान लो मैंने एक बार आपसे गुस्से से बात की, दूसरी बार भी गुस्से से बात की, चार बार की, अब यह तो मेरी आदत बन गई कि आपसे जब भी बात करनी है तो गुस्से से ही करनी है।

फिर वह आदत सभी के लिए बन जायेगी, क्योंकि गुस्से से बात करने की हमारी आदत बनती जा रही है। वो परिस्थिति जब भी आयेगी तो मुझे स्वतः ही गुस्सा आ जायेगा, फिर धीरे-धीरे वो हमारा संस्कार बन जायेगा। हमने ऑफिस में कहा कि गुस्से से ही काम कराना पड़ता है। हमारी वृत्ति है कि गुस्से से ही काम होता है तो मैंने गुस्से से बात की और जब गुस्से से बात की तो काम होता गया। जब मैं शाम को घर आती हूँ तो फिर बच्चों से कैसे बात करूँगी? गुस्से से ही करूँगी। जब मैं गुस्से से इनको बोलूँगी ना, तभी ये पढ़ेंगे क्योंकि गुस्से से बोलने की हमारी आदत बन चुकी है। अब वो हर जगह मेरे साथ-साथ जायेगी।

सारी आदतों को मिलाकर मेरा वैसा ही व्यक्तित्व बन गया। मैं जिस प्रकार के विचार उत्पन्न करूँगी, वैसा ही हमारा व्यक्तित्व बनेगा। ■■■

श्रद्धांजली

प्यारे साकार बाबा की पालना लेने वाली, बापदादा की अति लाडली सीता माता (रामनिवास भाई की युगल) ने सन् 1968 में कोलकाता से ज्ञान प्राप्त किया। आपकी तीन बच्चियां (सरोज बहन, पाण्डव भवन, मधु बहन और पदमा बहन कोलकाता बांगूर में) समर्पित रूप से अपनी सेवायें दे रही हैं। आपने परिवार सहित पहले जयपुर में सेवायें दी फिर 1990 से आबू निवासी बन मधुबन तथा शान्तिवन में अपनी सेवायें देती रही। कुछ समय से आपका स्वास्थ्य ठीक नहीं था। बहुत शान्त स्वरूप, धैर्यवत् स्थिति में रह शरीर के हिसाब-किताब को पूरा कर 11 अक्टूबर, 2018 सतगुरुवार को सवेरे पाण्डव भवन का अमृत व फूल स्वीकार किया और पूछा कि ''अब मैं शिवबाबा के पास जाऊं'', ऐसा कहकर आत्मा पंछी बापदादा की गोद में उड़ गई। आपकी उम्र 78 वर्ष थी।

ऐसी स्नेही, बापदादा की आज्ञाकारी, वफादार, दिलतख्तनशीन आत्मा को सर्व दैवी परिवार श्रद्धांजली अर्पित करता है।

1.नवापारा-राजिम- महामण्डलेश्वर स्वामी शिव स्वरूपानन्द महाराज को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पुष्पा बहन तथा ब्र.कु.नारायण भाई। **2.दिल्ली (शालीमार बाग)-** 'अद्भुत मातृत्व' कार्यक्रम का उद्घाटन करने के बाद मंच पर उपस्थित हैं स्वास्थ्य मंत्री भ्राता सत्येन्द्र जैन, डॉ.शुभदा नील, ब्र.कु.रीटा बहन ब्र.कु.कृष्णा बहन तथा अन्य। **3.दुर्ग-** चैतन्य देवियों की झाँकी का शुभारंभ करते हुए सांसद भ्राता ताम्रध्वज साहू जी, भ्राता प्रह्लाद रुंगटा, ब्र.कु.रीटा बहन तथा अन्य। **4.नई दिल्ली (करोल बाग)-** 'राजयोग मेडिटेशन फार हाई परफारमेन्स इन स्पोर्टस्' कार्यक्रम का उद्घाटन करने के पश्चात् मिनिस्ट्री ऑफ यूथ अफेयर्स से भ्राता नीरज कुमार, कुश्ती कोच भ्राता राजकुमार जी, जुडो कोच स्पोर्ट्स अथारिटी आफ इन्डिया से भ्राता सोहन अटल, बी.जे.पी.मोर्चा अध्यक्ष भ्राता पवन चिल्लर, कोच भ्राता भगवत प्रसाद गुप्ता, ब्र.कु.पुष्पा बहन, ब्र.कु.विजय बहन तथा अन्य। **5.सिवनी-** किसान सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम में मंचासीन हैं विधायक भ्राता दिनेश (मुनमुन) राय, अनुविभागीय अधिकारी, कृषि, भ्राता मोरिस नाथ, उपसंचालक किसान कल्याण तथा कृषि विकास केन्द्र भ्राता एस.के.धुर्वे जी, जिला पंचायत अध्यक्ष बहन मीना बिसेन, ब्र.कु.नीता बहन तथा अन्य यात्री भाई-बहनें। **6.रायपुर (बालौदा बाजार)-** चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता जनक राम वर्मा, भ्राता संदीप वाजपेई, ए.डी.ओ.भ्राता लेखराम सेन तथा ब्र.कु.नीरा बहन। **7.नरसिंहपुर-** किसान सशक्तिकरण अभियान का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता गोविंद सिंह पटेल, ब्र.कु.सुमंत भाई, ब्र.कु.माधुरी बहन, बी.जे.पी.किसान संघ के उपाध्यक्ष भ्राता साहब सिंह पटेल तथा अन्य। **8.भिलाई-** चैतन्य देवियों की झाँकी अवलोकन के बाद समूह चित्र में बी.एस.एफ.के डी.आई.जी.भ्राता शेखावत जी, डी.ए.वी.के प्राचार्य भ्राता प्रशांत कुमार, ब्र.कु.आशा बहन, भिलाई इस्पात सयंत्र के सी.ई.ओ.भ्राता अरुण रथ तथा अन्य।

मानव आत्मा का रूपान्तरण

■■■ ब्रह्माकुमार हरिपाल सिंह, वरिष्ठ मेट्रो ट्रेन चालक, दिलशाद गार्डन, दिल्ली

सम्पूर्ण परमात्म रचना में मनुष्य को ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है क्योंकि मनुष्य में जो चेतना है वो अनेक गुणों और शक्तियों से भरपूर है। विज्ञान ने भी अपनी खोज में यह पाया है कि यह सारा संसार ऊर्जा के सूक्ष्म कणों से मिलकर बना है। ये कण अविनाशी और अनन्त हैं, जो केवल अपना स्वरूप बदल सकते हैं परन्तु नष्ट नहीं होते हैं। निरंतर गतिमान होने के कारण ये कण निश्चित समयांतराल के पश्चात् ऊर्जा के ऊपरी स्तर से लेकर ऊर्जा के निम्न स्तर और फिर ऊर्जा के निम्न स्तर से, किसी घटनाक्रम से होते हुए पुन: ऊर्जा के ऊपरी स्तर तक पहुँचने के लिए सदैव चक्र में बंधे रहते हैं। इसी तरह, मनुष्य की आत्मशक्ति भी ऊँची अवस्था में होने पर देवतुल्य और निम्न अवस्था में होने पर दानवतुल्य है।

ऊर्जा का ऊँचा स्तर बना देता है गुणवान

ऊर्जा का ऊँचा स्तर मानसिक शक्ति को बढ़ा कर मनुष्य को गुणवान, चरित्रवान, शक्तिवान और रूपवान बना देता है। इस कारण आस-पास की प्रकृति और प्राणी भी ऊर्जा की ऊँची अवस्था वाले बन जाते हैं। प्रकृति सुंदर एवं सुखदायी बन जाती है और समस्त संसार स्वर्ग कहलाता है। परन्तु धीरे-धीरे बीतते समय के साथ-साथ मनुष्य की यही आत्मिक/आध्यात्मिक ऊर्जा भी धीरे-धीरे घटते क्रम की ओर अग्रसर होती रहती है जिससे उसका चरित्र, गुण, शक्ति और प्राकृतिक सौंदर्य भी घटने लगता है। उसके आत्मिक गुण जैसे कि प्रेम, शान्ति, पवित्रता, शक्ति, ज्ञान, सुख और आनन्द आदि विकृत होकर नफरत, अशान्ति, अपवित्रता, शक्तिहीनता, अज्ञानता, दुख, विषाद, ईर्ष्या-द्वेष आदि में बदल जाते हैं। चरित्र और गुणों के निम्न स्तर पर पहुँचने से वही मानव अत्याचारी, दुराचारी, बलात्कारी, भ्रष्टाचारी, लोभाचारी और अहंकारी बन जाता है जिससे प्रकृति भी दूषित हो जाती है। समाज और संसार – रंगभेद, जातिभेद, भाषाभेद, धर्मभेद, नीतिभेद, राष्ट्रभेद आदि अनेक प्रकार के भेदों में बंट जाते हैं।

आत्मिक शक्ति घटने से बदल जाता है स्वरूप

जिस प्रकार किसी परमाणु नाभिक के चारों ओर घूमते हुए, ऊपरी स्तर के इलेक्ट्रॉन कण की ऊर्जा घटने पर वह परमाणवीय संरचना से बाहर चला जाता है और उस परमाणु का स्वरूप ही बदल जाता है, ठीक उसी प्रकार, मनुष्य आत्मा की आत्मिक शक्ति घटने से वह भी अपने मूल स्वरूप से बाहर चली जाती है। उसका वास्तविक स्वरूप बदल जाता है। वास्तविक प्रेम और ज्ञान के अभाव में मानव दूसरे मानवों को कुदृष्टि से देखने लगता है और अशुभ भावना से भर जाने के कारण हिंसात्मक होता चला जाता है।

विकारों रूपी अग्नि ने किया काला

जड़ प्रकृति अपने अंदर के असंतुलन को एक सीमा तक सहन करते-करते स्वत: ही स्वयं में विस्फोट कर, स्वयं को फिर से संतुलित कर लेती है, जैसे कि गुब्बारे के अंदर निरंतर हवा भरते रहने से गुब्बारा फट जाता है। पानी का प्राकृतिक स्वभाव शीतल और रूप तरल है, गरम करते रहने से वह भी उबलकर, भाप बनकर उड़ जाता है और फिर बूंदों के रूप में अपने वास्तविक स्वरूप में आ जाता है। उसी प्रकार मनुष्य आत्मा भी विकारों रूपी अग्नि से प्रभावित होकर काली और कमजोर हो जाती है जिसे पुन: सच्चे स्वरूप में टिकने की आवश्यकता है।

प्रकृति में विस्फोट की भांति हमें भी अपनी कमजोरियों में विस्फोट करने की आवश्यकता है। आज हम अमीरी, गरीबी, दलित, पिछड़ा, छूत-अछूत, हिन्दू-मुस्लिम जैसी कमजोर भावानाओं से ग्रसित हैं। हर एक मनुष्य एक-दूसरे को ही कोसता रहता है। मन में बसी इस प्रकार की दुर्भावना ही संसार के पतन का कारण बनती जा रही है। आपसी विचारों की टकराहट ही एक-दूसरे को कामाग्नि-क्रोधाग्नि में जलाकर भस्म कर रही है।

इससे बचने का उपाय यही है कि हम अल्पकालिक देहाकर्षण, इन्द्रियाकर्षण और संसाधनों के आकर्षण से मुक्त होकर; स्वयं पर और तीनों लोकों में परम शक्तिशाली परमात्मा की ओर अपना ध्यान आकर्षित करें। अंतर्मुखता की गुफा में बैठ अपने शक्तिशाली सच्चे स्वरूप में टिक जायें। यह विधि ही राजयोग है जो मनुष्य को स्वयं पर राज करना सिखाती है। जो स्वयं पर राज कर सकता है वही प्रकृतिजीत, विकारजीत सो जगतजीत; देवतुल्य और पूजनीय बन सकता है। स्वचिंतन ही आत्मोन्नति की सीढ़ी है। इसी से ही आत्मा में सच्चा परिवर्तन संभव है। ■■■

उम्र की जंजीरों से आजाद रहें

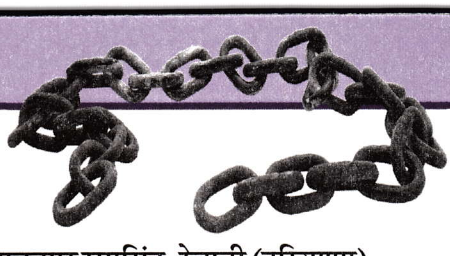

■■■ ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी (हरियाणा)

कभी भी कोई व्यक्ति इतना उम्रदराज नहीं होता कि वह कुछ नया और बेहतर न जान सके। झुर्रियों के निशान चेहरे की खूबसूरती बढ़ा देते हैं। वे हमारे अनुभवों की हकीकत बयां करते हैं। जिन्दगी के साल गुजरने के साथ-साथ बुढ़ापा आना कतई जरूरी नहीं है लेकिन इसे न आने देने की तैयारी इन्सान को किशोरावस्था से ही शुरू कर देनी चाहिए। अकलमन्दी का रहस्य है वृद्धावस्था में भी अपने भीतर के बच्चे को बनाए रखना अर्थात् उमंग-उत्साह कभी नहीं खोना।

अपनी वृद्धावस्था पर अफसोस क्यों? यह सौभाग्य अनेकों के भाग्य में नहीं है। आपके 60 वर्ष कभी पैसे कमाने में तो कभी परिवार का जीवन सँवारने में बीत गये, खुद की मर्जी से कुछ करने का वक्त तो अब आया है। इस अवस्था से डरें नहीं क्योंकि बुढ़ापा तो बस एक दौर है, बचपन और जवानी की तरह। जब अनुभवी नहीं थे, परिपक्व नहीं थे तब तो भय नहीं लगा, फिर अब क्यों? समय पर खाओ-पीओ, अपने विचारों में सदा सर्व के प्रति शुभभावना, शुभकामना रखो क्योंकि बुढ़ापे के नखरे अब काई सहन करने वाला नहीं है।

मनुष्य की उम्र आज सर्टिफिकेट के आधार पर बताई जाती है लेकिन जोश, इरादे या जुनून का सर्टिफिकेट से कोई सम्बन्ध नहीं है। कोई भी व्यक्ति 60 या 80 वर्ष में भी जीवन को युवाओं-सा जोशिला बनाए रख सकता है। यदि कोई सोचता है कि मैं बूढ़ा हूँ तो वह बूढ़ा बन जायेगा। कहावत है ना – जैसा सोचेंगे वैसा बनेंगे। अपने को बूढ़ा समझने से शरीर से मेहनत करना बन्द कर देंगे, किसी काम की जिम्मेवारी नहीं उठायेंगे, बीमारियाँ आने लगेंगी, दिन-रात इन्हीं विचारों में फंसे रहेंगे और मृत्यु का इन्तजार करने लगेंगे।

दूसरे व्यक्तियों से यह कहते सुना जा सकता है कि अब तो आप रिटायर हो गए, अब आप युवा नहीं रहे इसलिए बुढ़ापे को स्वीकार करो लेकिन हमें इस अहसास को खत्म करना है, विचारों के बूढ़ेपन को स्वीकार नहीं करना है। बुढ़ापे का भय और भ्रम उन लोगों में अधिक पाया जाता है जिनका जीवन में कोई उद्देश्य नहीं होता। वे ना अपने लिए चिन्तन करते हैं और ना दूसरों के लिए।

इस संसार में हर इंसान अनूठा है और किसी न किसी अनूठे काम को करने के लिए तत्पर है। कई लोगों ने 60 से 100 और अधिक की उम्र में भी अनूठे काम किए हैं –

- रोनाल्ड रीगन 70 वर्ष की उम्र में एक्टिंग छोड़ अमेरिका के राष्ट्रपति बने।
- जोहरा सहगल भारतीय सिनेमा में 100 साल की उम्र में भी नाटक खेलती रही।
- खुशवन्त सिंह 99 वर्ष की उम्र में पत्रकारिता करते रहे।
- आस्कर स्वान ने 72 वर्ष की उम्र में ओलम्पिक पदक (रजत) जीतने का रिकार्ड बनाया।
- टेड इनग्राम (इंगलैंड) ने 93 वर्ष की आयु में भी अखबार बांटना नहीं छोड़ा है।
- अन्नामेटी राबर्टसन ने 101 वर्ष की आयु तक चित्रकारी की।
- विनीफ्रेड प्रिस्टल (अमेरिका) ने 74 वर्ष की आयु में भी वेट लिफ्टिंग में दो विश्व कीर्तिमान स्थापित किए।
- आलिव रिली (अमेरिका) ने 107 वर्ष की आयु में ब्लागिंग सीखी।
- आर्थर विस्टन ने 100 वर्ष की आयु तक एक कम्पनी में काम किया और एक कर्मठ कर्मचारी रहे।
- वालटर वाटसन को अमेरिका के सबसे उम्रदराज डॉक्टर होने का गौरव प्राप्त है जो 100 साल के होने के बावजूद रोजाना क्लीनिक जाते थे।
- मानकौर चंडीगढ़ से हैं, जो 110 वर्ष की आयु में 100 मी. व 200 मी.रेस में गोल्ड जीती हैं।
- प्रजापिता ब्रह्मा बाबा 93 वर्ष की उम्र तक शिवबाबा के भागीरथ रहे।

सबसे बड़ा मिसाल हैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी जी जो अपने 101 वर्ष पूरे करके भी देश व विदेश में ईश्वरीय सेवा में उसी उमंग और उत्साह से सेवारत हैं।

बुढ़ापा तो अनिवार्य है पर वृद्ध अवस्था आवश्यक नहीं। यह तब शुरू होती है जब कोई मनुष्य यह सोचने लगे कि अब हम यह काम नहीं कर सकते क्योंकि अब हमारी उम्र हो गई है। जैसे ही वे लोग काम करना छोड़ देते हैं, उनकी सेहत, विचारधारा, खुशी, व्यवहार सब गिरावट में आने लगते हैं जबकि काम करने वाले बुढ़ापे में भी हृष्ट-पुष्ट रहते हैं। उनके सामने बीमारी भी हार मान लेती है। ■■■

1.रतलाम (डोंगरेनगर)- किसान सशक्तिकरण अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कृषि आयोग अध्यक्ष भ्राता ईश्वरलाल पाटीदार, कृषिमण्डी अध्यक्ष भ्राता प्रकाश जी भगौरा, ब्र.कु.सविता बहन, ब्र.कु.संगीता बहन तथा अन्य। **2.धार**- कालीका देवजी मेले में चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए सी.एम.ओ.बहन मधु सक्सेना, डिप्टी कलेक्टर, ब्र.कु.सत्या बहन तथा ब्र.कु.शीतल बहन। **3.सरायपाली**- चैतन्य देवियों की झाँकी का शुभारम्भ करते हुए भारती हॉस्पिटल के निदेशक भ्राता विश्वजीत गुप्ता, ब्र.कु.प्रमोद भाई, ब्र.कु.अहिल्या बहन तथा अन्य। **4.धमतरी**- चैतन्य देवी झाँकी का शुभारंभ करते हुए डॉ.टी.आर.ध्रुव, चिकित्सक जिला अस्पताल, डॉ.टीकम सिंह ध्रुव, चिकित्सक जिला अस्पताल, डॉ.चन्द्रमणि ध्रुव, दंत चिकित्सक, डॉ.श्रुति वासानी, दंत चिकित्सक, भ्राता महेश साहू, सेवानिवृत्त अभियंता विद्युत विभाग तथा ब्र.कु.सरिता बहन। **5.दिल्ली (मजलिस पार्क)**- चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करने के बाद उद्योगपति भ्राता राजेन्द्र मलिक, ब्र.कु.राजकुमारी बहन तथा अन्य ईश्वरीय स्मृति में। **6.दिल्ली (कुँवर सिंह नगर)**- पार्षद भ्राता सुरेश पहलवान को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुषमा बहन। **7.दिल्ली (नरेला मण्डी)**- तनाव प्रबन्धन कार्यक्रम में कस्तूरीराम कॉलेज में व्याख्यान देते हुए ब्र.कु.पीयूष भाई। **8.जबलपुर (कटंगा कालोनी)**- चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए लेफ्टिनेंट कर्नल भ्राता भगवती सिंह, लेफ्टिनेंट कर्नल भ्राता विकास राव चौहान, ब्र.कु.बाला बहन तथा अन्य। 9.करही- चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए नगरपालिकाध्यक्षा बहन आशा वासुरे, ब्र.कु.अनिता बहन तथा ब्र.कु.सारिका बहन।

1.रतलाम (नजरबाग कालोनी)- चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए अपर कलेक्टर भ्राता जितेन्द्र सिंह चौहान, रोटरी क्लब के अध्यक्ष भ्राता मनीष जैन, ब्र.कु.सीमा बहन तथा अन्य। **2.छतरपुर**- व्यापार और उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.गीता बहन, ब्र.कु.राज सिंह भाई, जिलाधीश भ्राता रमेश भण्डारी, इंकमटैक्स ऑफिसर भ्राता रामचन्द्र प्रसाद तथा गणमान्य उद्यमीजन। **3.बड़वानी**- किसान सशक्तिकरण अभियान का उद्घाटन करते हुए डॉ.भ्राता अवधेश स्वर्णकार, पूर्व भाजपा जिला अध्यक्ष भ्राता रमेश पटेल, ब्र.कु.मीना बहन, ब्र.कु.लीला बहन तथा अन्य। **4.भिलाई (चरौदा)**- चैतन्य नवदुर्गा झाँकी के उद्घाटन के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में हैं डिविजनल कोऑर्डिनेटर भ्राता डी.विजयकुमार, ब्र.कु.शिवानी बहन तथा अन्य। **5.ब्यावरा**- चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए विधायक भ्राता नारायण सिंह, नगरपालिकाध्यक्ष भ्राता अखिलेश, पत्रकार भ्राता राजू यादव, ब्र.कु.मधु बहन तथा अन्य। **6.ग्वालियर (माधवगंज)**- आध्यात्मिक कवि सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए डॉ.मुक्ता सिकरवार, डॉ.भारती पुजारी, कादम्बरी आर्य, जेवा राणा, प्रतिभा द्विवेदी, संगीता गुप्ता तथा ब्र.कु.आदर्श बहन। **7.खरगोन**- किसान सशक्तिकरण अभियान का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु.प्रभाकर, जनपद पंचायत के सी.ई.ओ.भ्राता एस.के.शर्मा, कृषि वैज्ञानिक डॉ.अनीता शुक्ला, ब्र.कु.किरण बहन तथा अन्य। **8.कसरावद (खरगोन)**- किसान सशक्तिकरण अभियान के समापन अवसर पर उपस्थित हैं भाजपा नेता बडोले जी, कृषि उपज मण्डी अध्यक्ष भ्राता मांगीलाल गाडगे, ब्र.कु.किरण बहन तथा अन्य।

नशा मजा है या सजा

■■■ ब्रह्माकुमारी संतोष, तोशाम (हरियाणा)

जिस नशे को हम मजा समझते हैं वही मजा हमारे लिए सजा बन जाता है। जिसको खुशी व शान समझते हैं वही हमारे और हमारे परिवार के लिए एक मुसीबत बन जाता है। नशा करने के बाद जो अपने को बादशाह समझता है वही नशा उतरने के बाद गुलामों का भी गुलाम बन जाता है। नशे से शारीरिक, बौद्धिक, पारिवारिक, सामाजिक और आर्थिक नुकसान ही नुकसान हैं।

कैसे बचें नशे से?

जब हम राजयोग का अभ्यास करते हैं तो सत्य ज्ञान के साथ-साथ अनेक परमात्म शक्तियां भी प्राप्त होती हैं। हमें नारायणी नशा चढ़ जाता है। मन को अतींद्रिय सुख भासता है और धीरे-धीरे उसी में मन रमण करने लगता है। सच्चा सुख मिलने से मन नियंत्रण में आ जाता है। फिर वह बाहरी सुख या खुशी पाने के लिए भटकता नहीं है। धीरे-धीरे हम इंद्रियों के राजा बन जाते हैं। फिर हम अपनी कर्मेन्द्रियों को परमात्म मर्यादाओं के अनुकूल चलाते हैं। जब योगी अपने स्वमान में रहता है तो मान-शान और भाग्य तो परछाई की तरह उसके पीछे-पीछे आ ही जाता है। इसमें किसी भी प्रकार का शॉर्टकट नहीं चलता। शॉर्टकट तो खतरों की खान है, जो हमें गर्त में ले जाता है और सत्य का नाश कर देता है। अब हमें सोचना है कि हमें क्या करना है। ये हमारे हाथों में है कि हमें खुशी अल्पकाल की चाहिए या लंबे काल की, सिर्फ अपने लिए चाहिए या सभी के लिए।

नशे के तरीके

लोग बीड़ी, सिगरेट, तंबाकू, शराब, अफीम, गांजा, चरस, गोलियाँ, कैप्सूल और इंजेक्शन आदि बहुत तरीकों से नशा करते हैं। अनेक नशों में रस ढूँढ़ते रहते हैं। अगर आत्मिक नशा चढ़ा रहे, एक परमात्मा के नशे में रहें और परमात्मा से सर्व संबंधों का रस लेते रहें तो वाणी मीठी और चेहरे पर मुसकान होगी और हम क्या से क्या बन जाएँगे, हर असंभव को संभव कर पाएँगे। दानव से मानव, मानव से देव बन जाएँगे। जो अपना समय, ऊर्जा और धन व्यसनों में लगाते हैं वे बीमारियों को आमंत्रित करते हैं। बीमारियों को ठीक करने के लिए फिर समय, ऊर्जा और धन खर्च करते हैं। इसकी बजाय हमें अपनी और अपने परिवार की खुशी के लिए इन सब से बचना है और परमात्मा से जुड़ना है। इसके लिए किसी नजदीकी राजयोग सेंटर से जुड़कर प्रतिदिन एक घंटे का समय देना है और 23 घंटे लेना ही लेना है। ■■■

सदस्यता शुल्क:

(भारत) वार्षिक: 100 /- आजीवन : 2,000 /-
(विदेश) वार्षिक - 1,000/- आजीवन - 10,000/-

शुल्क ड्राफ्ट या ई-मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता :

'ज्ञानामृत', ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510
(आबू रोड) राजस्थान, भारत।

For Online Subscription: **Bank**: State Bank of India, **A/c Holder Name :** Gyanamrit, **A/c No:** 30297656367
Branch Name : PBKIVV, Shantivan, IFSC Code: SBIN0010638

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र :
Mobile: 09414006904, 09414423949, **Email:** hindigyanamrit@gmail.com, **omshantipress@bkivv.org**

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, मुख्य सम्पादक एवं प्रकाशक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबूरोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन-307510, आबूरोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया।
मुख्य सम्पादक - ब्र.कु. आत्मप्रकाश, **सम्पादक** - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन, **सह-सम्पादक** - ब्र.कु. सन्तोष, शान्तिवन।

फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये :
E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org, omshantiprintingpress@gmail.com, Website: gyanamrit.bkinfo.in

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month &
Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : December, 2018.

शान्तिवन (आबू रोड)- इंडिया वन सोलर प्लाँट में 1MW PV सोलर प्लाँट का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी जी, राजयोगिनी दादी ईशु जी, राजयोगी भ्राता निर्वैर जी, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई तथा अन्य।

कोलकाता- ग्लोबल इनलाइटमेन्ट सेन्टर के आधारशिला समारोह का उद्घाटन करते हुए पश्चिम बंगाल के राज्यपाल महामहिम भ्राता केसरीनाथ त्रिपाठी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.गोपाल भाई, ब्र.कु.मुन्नी बहन, ब्र.कु.हंसा बहन, ब्र.कु.कानन बहन तथा ब्र.कु.रजनी बहन।

जयपुर (राजापार्क)- चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुन्धरा राजे सिंधिया, ब्र.कु.पूनम बहन तथा अन्य।

लखनऊ- उ.प्र.के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.मृत्युंजय भाई। साथ में ब्र.कु.राधा बहन तथा अन्य।

1.अहमदनगर- 75 वर्ल्ड रेकॉर्ड करने वाले प्रथम भारतीय ब्र.कु.डॉ.दीपक हरके को ग्लोबल रेकार्डस् का प्रमाणपत्र देकर सम्मानित करते हुए समाजसेवी भ्राता अन्ना हजारे। **2.जगाधरी-** हरियाणा विधानसभा अध्यक्ष चौधरी कँवरपाल का स्वागत करते हुए ब्र.कु.अंजू बहन। **3.पौड़ी गढ़वाल-** उत्तराखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन बेबी रानी मौर्या को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शिविका बहन तथा ब्र.कु.मेहरचन्द भाई। **4.वडोदरा (अलकापुरी)-** रशियन दिव्य डांस कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए गुजरात विधानसभा अध्यक्ष भ्राता राजेन्द्र त्रिवेदी, विधायक जितेन्द्र भाई सुखाड़िया, पूर्व मेयर भ्राता एन.वी.पटेल, ब्र.कु.डॉ.निरंजना बहन, ब्र.कु.संतोष बहन तथा अन्य। **5.ओ.आर.सी. (गुरुग्राम)-** सुरक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए डी.जी.होम गार्ड, महान भारत सागर, ब्र.कु.आशा बहन, ब्र.कु.शुक्ला बहन, कर्नल सती भाई, ब्रिगेडियर भ्राता हरवीर सिंह तथा पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक, बी.एस.एफ., भ्राता आर.के.हसिजा। **6.कुल्लू-** हिमाचल प्रदेश के कृषि मन्त्री भ्राता रामलाल मारकण्डे को ईश्वरीय साहित्य प्रदान करते हुए ब्र.कु.किरण बहन। **7.राजविराज (नेपाल)-** प्रदेश नं.2 के भूमि व्यवस्था, कृषि एवं सहकारी मंत्री भ्राता शैलेन्द्र प्रसाद शाह को भैया दूज के उपलक्ष्य में आत्म-स्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.भगवती बहन। **8.धनुषाधाम-** नेपाल के गृहमंत्री भ्राता ज्ञानेन्द्र यादव को आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए ब्र.कु.कमला बहन। **9.कानपुर (चन्द्र नगरी)-** सेवाकेन्द्र के वार्षिक उत्सव का उद्घाटन करते हुए उ.प्र.के कैबिनेट मंत्री भ्राता सतीश महाना, ब्र.कु.विद्या बहन, ब्र.कु.उर्मिला बहन, ब्र.कु.गिरीजा बहन तथा ब्र.कु.अर्चना बहन। **10.तवांग (अरुणाचल प्रदेश)-** केन्द्रीय गृह राज्यमंत्री भ्राता किरण रिजीजू, राज्य उत्सव में लगाए गए ब्रह्माकुमारीज स्टाल का अवलोकन करने के बाद ब्र.कु.मीना बहन तथा ब्र.कु.कविता बहन के साथ।